



Celebrating



शाला ध्वनि
KVS News

December 2023
Diamond Jubilee Special Issue



प्रमुख तथ्य

- ▶ केन्द्रीय विद्यालय संगठन की शुरुआत वर्ष 1963 में भारत सरकार के स्थानांतरणीय कर्मचारियों के बच्चों की सुविधा के लिए 20 रेजिमेंटल विद्यालयों से हुई थी। अभी देश में 1255 केन्द्रीय विद्यालय संचालित हैं, जिनमें 14 लाख से अधिक विद्यार्थी शिक्षारत हैं।
- ▶ केन्द्रीय विद्यालय संगठन को 15 दिसंबर 1965 को सोसायटी पंजीकरण अधिनियम (1860 का XXI) के तहत एक सोसायटी के रूप में पंजीकृत किया गया था और तब से 15 दिसंबर को के.वि.सं. स्थापना दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- ▶ केन्द्रीय विद्यालय संगठन का ध्येय वाक्य 'तत् त्वं पूषण अपावृणु' है, अर्थात् 'हे ईश्वर ज्ञान पर छाए आवरण को हटाएं। यह वाक्य इंशावस्योपनिषद से लिया गया है।
- ▶ तीन केन्द्रीय विद्यालय विदेश में भी संचालित हैं- काठमाण्डु, मॉस्को और तेहरान।
- ▶ के.वि.सं. का मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है। पूरे देश में फैले 25 क्षेत्रीय कार्यालय हैं, जो विद्यालयों के शैक्षणिक और प्रशासनिक कामकाज की निगरानी करते हैं।
- ▶ सभी केन्द्रीय विद्यालय सह-शैक्षणिक समग्र स्कूल हैं, जो अपने विद्यार्थियों को समान शिक्षा प्रदान करते हैं। केन्द्रीय विद्यालय सीबीएसई से संबद्ध हैं और एनसीईआरटी पाठ्यक्रम और पुस्तकों का अनुपालन करते हैं। केन्द्रीय विद्यालय अपने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर ध्यान केंद्रित करते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और विभिन्न सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों को प्रदान करने के लिए जाने जाते हैं।
- ▶ केन्द्रीय विद्यालयों का पास प्रतिशत सीबीएसई में सर्वश्रेष्ठ स्कूलों में शामिल होता है।
- ▶ एक भारत श्रेष्ठ भारत, खेल कला और एनसीसी जैसी गतिविधियों को बढ़ावा देकर विद्यार्थियों में 'भारतीयता' की भावना जागृत करना भी केन्द्रीय विद्यालयों का एक मिशन है।
- ▶ शिक्षकों को गुणवत्तापरक प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए केन्द्रीय विद्यालय संगठन द्वारा पांच शिक्षा एवं प्रशिक्षण के आंचलिक संस्थान संचालित किये जाते हैं, जो भुवनेश्वर, चंडीगढ़, ग्वालियर, मुम्बई और मैसूरु में स्थित हैं।
- ▶ देश भर में 70 केन्द्रीय विद्यालय दो पालियों में चलते हैं।
- ▶ केन्द्रीय विद्यालयों के सभी नवनिर्मित और निर्माणाधीन भवनों में हरित भवन मानक अपनाए गए हैं।
- ▶ केन्द्रीय विद्यालय संगठन के विद्यालय भवन निर्माण मानकों में दिव्यांग जनों के लिए रैम्प और विशेष शौचालय बनाने का प्रावधान है और उसे लागू भी किया जा चुका है।



उत्कृष्टता के 60 वर्षों का महोत्सव

Celebrating
60
years of Excellence



तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

शाला ध्वनि

विशेषांक

December 2023
Diamond Jubilee Special Issue

केन्द्रीय विद्यालय संगठन (मु.), नई दिल्ली
Kendriya Vidyalaya Sangathan (HQ), New Delhi



<https://kvsangathan.nic.in/>



@KVSHQ



@KVS_HQ



@kvshqr



KVS HQ



© Kendriya Vidyalaya Sangathan

For internal circulation only.

Shala Dhvani Newsletter

Special Issue on KVS Diamond Jubilee

Patron: Nidhi Pandey, Commissioner, KVS

Editor: Ajeeta Longjam, Joint Commissioner (Admin-1), KVS

Editorial In-charge: Sachin Rathore, Assistant Editor, KVS

Designed by: Publication Section

Published by Ajeeta Longjam, Joint Commissioner (Admin-1) on behalf of Kendriya Vidyalaya Sangathan.

Readers can send their comments and suggestions through e-mail at:
shaaladhvani@gmail.com

INDEX

S. No.	Title	Page No.
1.	The Hon'ble PM Congratulates KVS on Diamond Jubilee	7
2.	संदेश	9
3.	केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने मनाई हीरक जयंती	10
4.	Kendriya Vidyalaya Sangathan Celebrates Diamond Jubilee	11
5.	Guest Speech at Diamond Jubilee Program	12-13
6.	Glimpses of the Diamond Jubilee Celebration	14-21
7.	Media Coverage of the KVS 60 Years Celebration Program	22-23
8.	The Memoirs of KVS Headquarters' Officials	26-36
9.	The Memoirs of KVS Region Officials	39-89
10.	The Memoirs of KVS ZIET Officials	93-103
11.	KVS Commissioners Since 1963	104-105



एतद् सर्वं पूषन् ध्यातव्यम्
केन्द्रीय विद्यालय संगठन



K. Narender Nath
TGT Art Education
KV Hakimpet, Hyderabad



The Hon'ble PM Congratulates KVS on Diamond Jubilee

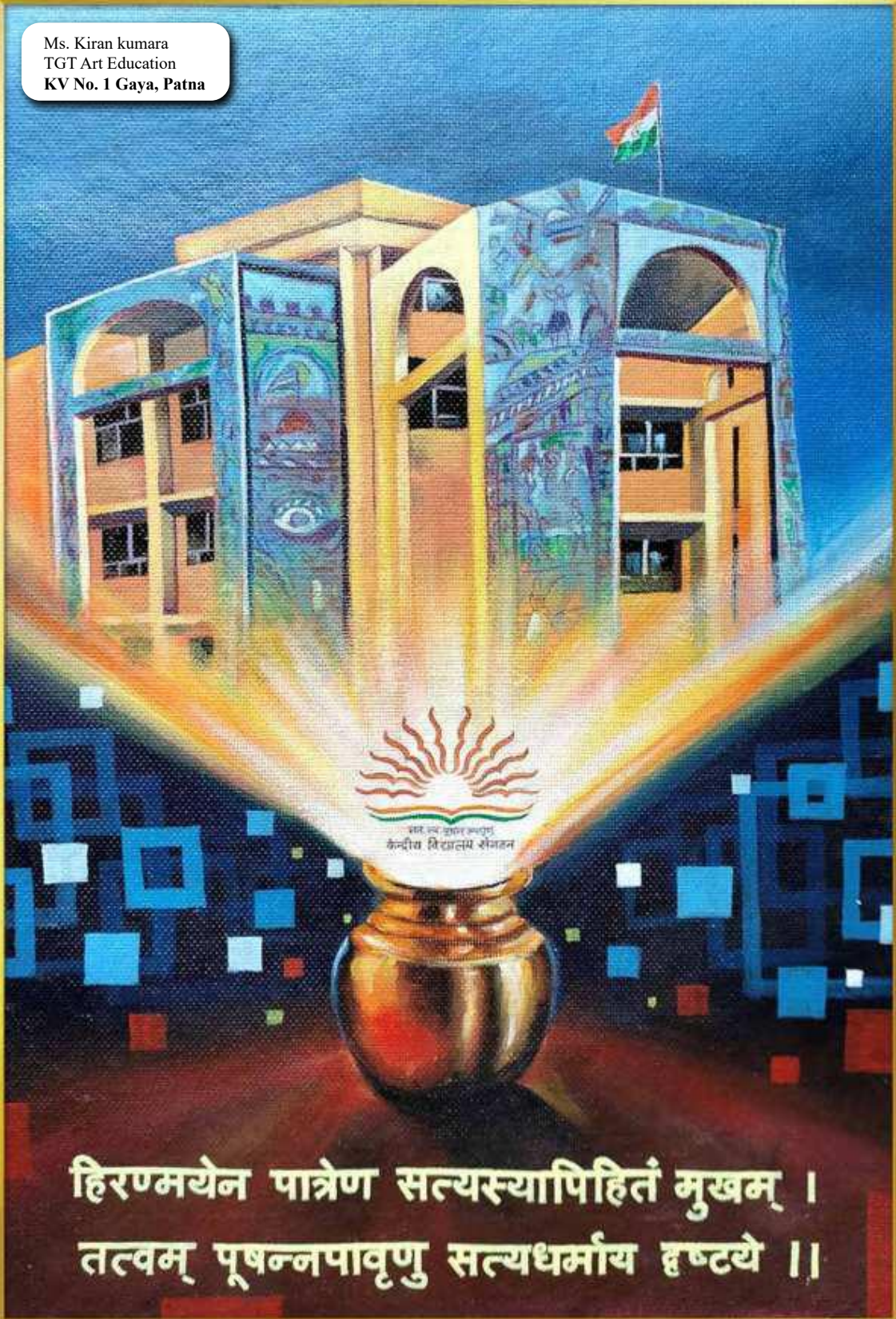


Greetings to all students, staff, supporting staff and alumni of the Kendriya Vidyalaya family on their Diamond Jubilee! It is an occasion to celebrate and admire the remarkable achievements of this esteemed educational community. Over the years, Kendriya Vidyalayas have played a pivotal role in shaping the future of our nation by providing quality education to several students. Their contribution to academic excellence and holistic development of students is truly commendable.





Ms. Kiran kumara
TGT Art Education
KV No. 1 Gaya, Patna





संदेश

केन्द्रीय विद्यालय संगठन की हीरक जयंती के अवसर पर प्रकाशित 'शाला ध्वनि' का विशेषांक पाठकों को सौंपते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। हीरक जयंती का यह विशेष अवसर हमें न केवल पिछले छह दशकों की यात्रा की याद दिलाता है, बल्कि हमें भविष्य की ओर एक नई दिशा और आशा के साथ देखने की प्रेरणा भी देता है।

'शाला ध्वनि' के इस विशेषांक के माध्यम से, हम उन सभी उपलब्धियों का जश्न मना रहे हैं, जो संगठन ने विगत वर्षों में हासिल की हैं। हमारे संगठन की स्थापना के समय से ही, हमारा उद्देश्य विद्यार्थियों में भारतीयता का भाव विकसित करते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना रहा है। आज, हम गर्व से कह सकते हैं कि हमने न केवल इस उद्देश्य को पूरा किया है, बल्कि स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में नए मानक भी स्थापित किए हैं।

हमारे विद्यार्थियों ने अकादमिक, खेलकूद, कला और सांस्कृतिक गतिविधियों में उत्कृष्टता हासिल की है, जो केन्द्रीय विद्यालय संगठन के समर्पण और श्रेष्ठ शिक्षा प्रणाली का परिचायक है। हमारे शिक्षकों और स्टाफ की अथक मेहनत व समर्पण ने ही हमें इस मुकाम तक पहुंचाया है।

इस विशेषांक में मुख्यालय के सभी वरीय अधिकारियों, समस्त 25 संभागों के उपायुक्तों और पांचों जीट के निदेशकों द्वारा लिखित 60 वर्ष की यात्रा पर आधारित अनुभवों और संगठन की भविष्य की दिशा के बारे में विविध लेख संकलित किए गए हैं। हम आशा करते हैं कि ये लेख न केवल के.वि.सं. में आने वाली भावी पीढ़ी को प्रेरित करेंगे, बल्कि उनका मार्गदर्शन भी करेंगे। साथ ही 15 दिसंबर 2023 को नई दिल्ली में आयोजित भव्य हीरक जयंती समारोह के यादगार पलों को भी इस अंक में खूबसूरती से प्रस्तुत किया गया है।

एक बार पुनः मैं, सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों, स्टाफ, और सभी सदस्यों को हीरक जयंती की हार्दिक बधाई देती हूँ। आइए हम सब मिलकर इस गौरवशाली यात्रा को आगे बढ़ाएं और एक नए भविष्य की ओर अग्रसर हों।

निधि पाण्डे
आयुक्त



केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने मनाई हीरक जयंती

नई दिल्ली 15 दिसंबर 2023: केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवा के 60 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर अपनी हीरक जयंती मनाई। मुख्य समारोह का आयोजन 15 दिसंबर 2023 को पीएमश्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 दिल्ली छावनी में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन सभागार में किया गया, जिसमें मा. शिक्षा और कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे। यह समारोह राष्ट्र के युवाओं को पोषित करने में के.वि.सं. द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका को प्रतिबिंबित करता प्रतीत हुआ।

इस समारोह में अनेक गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति रही, जिनमें शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमती अनूतपूर्णा देवी, शिक्षा राज्य मंत्री डॉ. सुभाष सरकार, शिक्षा और विदेश राज्य मंत्री डॉ. राजकुमार रंजन सिंह, सचिव, स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय श्री संजय कुमार, के.वि.सं. की आयुक्त श्रीमती निधि पाण्डे, के.वि.सं. के पूर्व विद्यार्थियों के प्रतिनिधि के रूप में एयर वाइस मार्शल मनोज कुमार मेहरा, पद्म श्री और अर्जुन पुरस्कार विजेता, श्रीमती दीपा मलिक और शिक्षा मंत्रालय, सीबीएसई, एनसीईआरटी, एनआईओएस, एनवीएस आदि के वरिष्ठ अधिकारी शामिल रहे।

इस अवसर पर केन्द्रीय विद्यालय संगठन की 60 वर्षों की यात्रा पर प्रकाश डालने के लिए एक मनोरम प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया, साथ ही एक वीडियो के माध्यम से संस्थान के इतिहास को भी प्रदर्शित किया गया।

समारोह में पधारे अतिथियों को संबोधित करते हुए, श्री धर्मेन्द्र प्रधान ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की दिशा में छह दशक की प्रतिबद्धता के लिए केन्द्रीय विद्यालय संगठन को हार्दिक बधाई दी।

श्री प्रधान ने कहा, 'केन्द्रीय विद्यालय हमारे देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा और 2047 तक विकसित भारत के सपने को साकार करने में संगठन की भूमिका महत्वपूर्ण है।'

अगले 25 वर्षों में, विशेष रूप से परिवर्तनकारी 'अमृत काल' के दौरान, देश को नेतृत्व प्रदान करने में के.वि.सं. की महत्वपूर्ण पर प्रकाश डालते हुए, श्री प्रधान ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) जैसी तकनीकी प्रगति के अनुरूप बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाने पर बल दिया।

सचिव स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता, श्री संजय कुमार ने अपने संबोधन में केन्द्रीय विद्यालय संगठन से जुड़े सभी लोगों के सामूहिक प्रयासों की सराहना की और स्कूली शिक्षा के परिदृश्य में उनके प्रभावशाली योगदान को रेखांकित किया। इस कार्यक्रम में श्रीमती दीपा मलिक और एयर वाइस एयर मार्शल मनोज कुमार मेहरा जैसे पूर्व छात्र भी शामिल हुए और अपने यादगार स्कूली अनुभवों को साझा किया।

समारोह में विभिन्न केन्द्रीय विद्यालयों के विद्यार्थियों ने अपनी रंगारंग प्रस्तुति से देश के विविध सांस्कृतिक विरासत की खूबसूरत छवि प्रस्तुत की।





Kendriya Vidyalaya Sangathan Celebrates Diamond Jubilee

New Delhi, 15th December 2023: Kendriya Vidyalaya Sangathan (KVS) reached a significant milestone as it celebrated its Diamond Jubilee, marking 60 years of exceptional education and holistic development. The event was organized on 15th December 2023 at Dr. Sarvepalli Radhakrishnan Auditorium in PMSHRI KV No. 2 Delhi Cantt, which was graced by Hon'ble Minister for Education and Skill Development & Entrepreneurship, Shri Dharmendra Pradhan. The event resonated with reflections on the pivotal role KVS has played in nurturing the minds of the nation's youth.

The commemorative ceremony, witnessed the esteemed presence of several dignitaries, including Minister of State for Education Smt. Annpurna Devi, Minister of State for Education Dr. Subhas Sarkar, Minister of State for Education and External Affairs Dr. Rajkumar Ranjan Singh, Secretary, Department of School Education & Literacy, Ministry

of Education Shri Sanjay Kumar, Commissioner of KVS, Smt. Nidhi Pandey, celebrated KVS Alumni, Air Vice Marshal Manoj Kumar Mehra, Padma Shri and Arjuna Awardee, Smt. Deepa Malik along with senior officials of Ministry of Education, CBSE, NCERT, NIOS, NVS etc.

The occasion was also graced by a captivating showcase of the journey of 60 years of KVS through an engaging exhibition and a video highlighting the institution's evolution.

Addressing the audience, Shri Dharmendra Pradhan extended heartfelt congratulations to the Kendriya Vidyalaya Sangathan for its 60 long decade's commitment towards providing quality education.

"The Kendriya Vidyalaya will play a pivotal role in the development of our country, crucial in realizing the vision of Viksit Bharat by 2047," emphasized Shri Pradhan.

Highlighting the crucial leadership role KVS is poised to assume in the next 25 years, particularly during the transformative 'Amrit Kaal,' Shri Pradhan advocated for the adoption of modern multidimensional approaches in line with the National Education Policy and technological advancements like Artificial Intelligence (AI).

Secretary, School Education & Literacy, Shri Sanjay Kumar, in his address, commended the collective

efforts of all involved with Kendriya Vidyalaya and underscored their impactful contributions to the landscape of school education. The event also saw illustrious alumni like Smt. Deepa Malik and Vice Air Marshal Manoj Kumar Mehra reminiscing about their memorable school experiences.

Students of various Kendriya Vidyalayas presented a beautiful picture of the diverse cultural heritage of the Country through their colorful presentations during the programme.





KVS diamond jubilee Celebration Program Alumni Speak

Air Vice Marshal Manoj Kumar Mehra got a chance to study in various Kendriya Vidyalayas starting from KV Bombay in Maharashtra to KV Gole Market and KV Sect. 2 RK Puram in New Delhi. He was commissioned in the 'Accounts Branch' of Indian Air Force in Dec 1990. In a career spanning more than 33 years, he has held various field and staff appointments. He has been S Accts officer of a premier flying base in Carnicobar, Air HQ (VB) and Air Force Station New Delhi. He has also served as Staff Officer to SASO Training Command, AOC-in-C Training Command and to the Vice Chief of the Air Staff.

'Kendriya Vidyalaya is a different world altogether'

"It is a true honor for me to stand in front of you today. Reflecting on my journey, I am reminded of the year 1974 when I joined the 1st grade at KV Mumbai. Over the course of my 12 years of education, I changed schools six times, averaging not more than two years in each school. Initially, I perceived this as a disadvantage, as I was unable to form long-lasting friendships like those who stayed in one school. However, later on, through social media, I connected with a group of schoolmates from each place I had been. Today, I proudly consider myself an alumna of Kendriya Vidyalaya Sangathan, with about 700 classmates connected with me from all over India. This network of classmates has become a source of strength for me.



Air Vice Marshal Manoj Kumar Mehra

KVs have instilled in me the ability to adapt to different situations. My educational journey took me from Mumbai to Kochi, where I faced a significant language barrier with my friends. In response, I quickly learned the Malayalam language to better engage with them. Subsequently, I moved to Goa and then Delhi. Revisiting my schools is always a nostalgic experience for me. I cherish the moments spent in classrooms as a student and often interact with teachers. During one such interaction, I asked the Principal how I could give back to the school. The principal responded, 'वक्त आगुना तब हम आपसे पूछेंगे'.

To all students, I want to convey that you should explore every nook and corner of India. It is a different world altogether, and by connecting with people from various states, you will realize your strength as a citizen of India. Embrace the diversity of your alumni; it is a unique and powerful asset."



KV Gole Market



KV Sector-2 RK Puram

Sh. Manoj Kumar Mehra studied in various Kendriya Vidyalayas, starting from KV Bombay to KV Gole Market and KV Sector-2 RK Puram in Delhi.



KVS diamond jubilee Celebration Program Alumni Speak

शॉटपुट एवं जेवलिन शो के साथ-साथ तैराकी एवं मोटर रेसिंग से जुड़ी दिव्यांग भारतीय खिलाड़ी श्रीमती दीपा मलिक की स्कूली शिक्षा कोलकाता स्थित केन्द्रीय विद्यालय फोर्ट विलियम में संपन्न हुई। उन्होंने 2016 पैरालंपिक में शॉटपुट में रजत पदक जीतकर इतिहास रचा। 30 की उम्र में तीन ट्यूमर सर्जरीज होने के बावजूद उन्होंने न केवल शॉटपुट एवं जेवलिन शो में राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में पदक जीते, बल्कि तैराकी एवं मोटर रेसिंग में भी कई स्पर्धाओं में हिस्सा लिया है। उन्होंने भारत की राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में 33 स्वर्ण तथा 4 रजत पदक प्राप्त किये हैं। वे भारत की पहली महिला हैं, जिन्हें हिमालय कार रेसि में आमंत्रित किया गया। वर्ष 2008 तथा 2009 में उन्होंने यमुना नदी में तैराकी तथा स्पेशल बाइक सवारी में भाग लेकर दो बार लिम्का बूक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में अपना नाम दर्ज करवाया। पैरालंपिक खेलों में उनकी उत्कृष्टतम उपलब्धियों के कारण उन्हें भारत सरकार ने अर्जुन पुरस्कार और राजीव गांधी खेल रत्न प्रदान किया। वर्ष 2017 में उन्हें देश के प्रतिष्ठित पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

‘मेरे जीवन में केन्द्रीय विद्यालय का बहुत बड़ा योगदान’

‘मेरे लिए यह बहुत ही गर्व की बात है कि मैं आज उस विद्यालय की हीरोक जयंती पर उपस्थित हूँ जिसने मेरे जीवन को संवारा है। आज तक मैंने अपने जीवन में जो भी हासिल किया है, उसमें मेरे केन्द्रीय विद्यालयों के शिक्षकों का बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मैं अपने सभी शिक्षकों एवं गुरुजनों को आज संगठन की 60वीं जयंती पर हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ। मेरा केन्द्रीय विद्यालय से बहुत ही अलग जुड़ाव रहा है। मैं आज यहां आप सभी को यह बताना चाहती हूँ कि मेरे मुश्किल दिनों में जब मैं बचपन में तीन साल व्हील चेयर पर रही, तब मेरे शिक्षकों ने मेरी सभी प्रकार से बहुत सहायता की, चाहे वह दूसरे बच्चों के साथ सामंजस्य बैठाना हो या पढाई के दौरान आने वाली दिक्कतों को दूर करना, मेरे शिक्षकों ने हमेशा मेरी बहुत मदद की। मेरे सभी शिक्षकों ने मुझे जीवन में आगे बढ़ने के लिए सदा प्रोत्साहित किया। मैं आशा करती हूँ कि सभी केन्द्रीय विद्यालयों के प्रांगण में दिव्यांग बच्चों की सहायता के लिए उचित संरचना हो, ताकि हम सभी हमारे मा. प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के 2047 तक विकसित भारत के सपने को पूरा करने में सहयोग कर सकें और हमारा केन्द्रीय विद्यालय इस दिशा में अपनी अग्रणी भूमिका निभाए।’



पद्मश्री दीपा मलिक, पैरालंपियन



केन्द्रीय विद्यालय फोर्ट विलियम जहां, से श्रीमती दीपा मलिक ने अपनी शिक्षा प्राप्त की।



Colors and Cultures Unite Vibrant Visuals of Diamond Jubilee Celebrations!





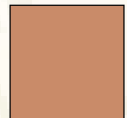
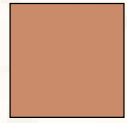
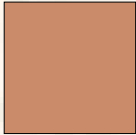
Colors and Cultures Unite Vibrant Visuals of Diamond Jubilee Celebrations!





Glimpses of the Diamond Jubilee Celebration

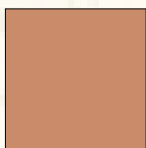
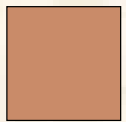
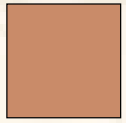
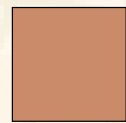
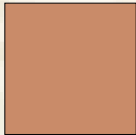
Arrival of Dignitaries





Glimpses of the Diamond Jubilee Celebration

Dignitaries visit the Special Diamond Jubilee Exhibition





Explore and Discover A Visual Feast of Exhibition Stalls







Capturing a Legacy

The Kaleidoscope of Moods and Moments from the Diamond Jubilee Celebration







Media Coverage of the KVS 60 Years Celebration Program

Media houses have graciously captured our Diamond Jubilee celebration on their news portals and in newspapers. Here are some glimpses of the event coverage.

TheIndianExpress
December 15, 2023, India

Kendriya Vidyalayas played pivotal role in shaping future of nation: PM Modi

The prime minister made this remark while congratulating the Kendriya Vidyalaya Sangathan for its Diamond Jubilee.

Prime Minister Narendra Modi said today, Friday, December 15 that Kendriya Vidyalayas have played an important role in creating the nation's future by delivering high-quality education to a large number of students.

On the occasion of the Kendriya Vidyalaya Sangathan's (KVS) Diamond Jubilee (60 years), Prime Minister Modi conveyed his best wishes to students, staff, and alumni.

There are about 1,250 Kendriya Vidyalayas in the country, as well as three KVS schools abroad. These schools educate around 15 lakh students.

Taking to X, PM Modi said, "Greetings to all students, staff, supporting staff and alumni of the Kendriya Vidyalaya family on their Diamond Jubilee! It is an occasion to celebrate and admire the remarkable achievements of this esteemed educational community. Over the years, Kendriya Vidyalayas have played a pivotal role in shaping the future of our nation by providing quality education to several students."

He also commended the Kendriya Vidyalayas' contribution to academic excellence and holistic development of students, PTI says.

Union Education Minister Dharmendra Pradhan also described the KVS as a "banyan tree" earlier in the day.

"For the last six decades, the Kendriya Vidyalaya Sangathan has been providing quality education to the students. This banyan tree of education is a major factor in the development of India. Today, when we are moving towards the goal of Viksit Bharat, the role of KVS becomes more important," he said at the Diamond Jubilee celebrations.

Further, Pradhan wished that the "KVS family continue to move forward on the path of future and nation-building through education as per the needs of the 21st century," and that it would contribute to the implementation of National Education Policy (NEP) 2020.

हिंदुस्तान
11 दिसंबर, 2023 / गुरुवार - 11

केवी ने शिक्षा में अहम भूमिका निभाई

लेखक जयवंती

केवी के परिवार में 60 साल के उत्सव का आयोजन किया गया। प्रधानमंत्री मोदी ने केवी के परिवार को बधाई दी और कहा कि केवी ने देश के भविष्य को आकार देने में अहम भूमिका निभाई है।

केवी के परिवार में 60 साल के उत्सव का आयोजन किया गया। प्रधानमंत्री मोदी ने केवी के परिवार को बधाई दी और कहा कि केवी ने देश के भविष्य को आकार देने में अहम भूमिका निभाई है।

पत्रिका
दिसंबर 15, 2023 के

केंद्रीय विद्यालय संगठन के 60 वर्ष पूर्ण होने पर अत्याधुनिक लेखक जयवंती का विशेष लेख

विद्यार्थियों को शिक्षा पुरस्कृत अतिथियों को दिए स्तुति चिह्न

इस लेख में लेखक ने केवी के परिवार को बधाई दी और कहा कि केवी ने देश के भविष्य को आकार देने में अहम भूमिका निभाई है।

केवी के परिवार में 60 साल के उत्सव का आयोजन किया गया। प्रधानमंत्री मोदी ने केवी के परिवार को बधाई दी और कहा कि केवी ने देश के भविष्य को आकार देने में अहम भूमिका निभाई है।

NDTV
December 15, 2023, India

Kendriya Vidyalayas Played Pivotal Role in Shaping Future of Nation: PM Modi

The prime minister extended his wishes to students, staff and alumni of KVS on the occasion of the Kendriya Vidyalaya Sangathan (KVS) diamond jubilee.

New Delhi: Kendriya Vidyalayas have played a pivotal role in shaping the future of the nation by providing quality education to several students, Prime Minister Narendra Modi said on Friday.

The prime minister extended his wishes to students, staffs and alumni of KVS on the occasion of the Kendriya Vidyalaya Sangathan (KVS) diamond jubilee.

There are over 1,250 Kendriya Vidyalayas across the country and three schools run by KVS abroad. Nearly 15 lakh students study in these schools.

"Greetings to all students, staff, supporting staff and alumni of the Kendriya Vidyalaya family on their Diamond Jubilee! It is an occasion to celebrate and admire the remarkable achievements of this esteemed educational community. Over the years, Kendriya Vidyalayas have played a pivotal role in shaping the future of our nation by providing quality education to several students. Their contribution to academic excellence and holistic development of students is truly commendable," the prime minister said in a post on X.

Earlier in the day, Union Education Minister Dharmendra Pradhan referred to the KVS as a "banyan tree".

"For the last six decades, the Kendriya Vidyalaya Sangathan has been providing quality education to the students. This banyan tree of education is a major factor in the development of India. Today, when we are moving towards the goal of Viksit Bharat, the role of KVS becomes more important," he said at the Diamond Jubilee celebrations.

"May the KVS family continue to move forward on the path of future and nation-building through education as per the needs of the 21st century and contribute to the implementation of NEP (National Education Policy) on ground," he added.



Global Green News

December 16, 2023, Website
Union minister dharmendra pradhan attends the diamond jubilee celebration of kendriya vidyalaya sangathan

The role of KV's will be important in realising the goal of Viksit Bharat by 2047 – Shri Dharmendra Pradhan

KV's are the laboratories for nurturing the multidimensional personalities of the children – Shri Dharmendra Pradhan

Union Minister for Education and Skill Development & Entrepreneurship, Shri Dharmendra Pradhan, attended the function commemorating the Diamond Jubilee of Kendriya Vidyalaya Sangathan today in New Delhi.

Minister of State for Education Smt. Anurupa Devi; Minister of State for Education and External Affairs, Dr. Rajkumar Ranjan Singh; Secretary, Department of School Education & Literacy, Ministry of Education Shri Sanjay Kumar; Air Vice Marshal, Manoj Kumar Mehra; Commissioner, KVS, Smt. Nishi Pandey; Padma Shri and Arjuna Award Winner and an alumnus of the Kendriya Vidyalaya, Smt. Deepa Malik; and other dignitaries and officials were also present at the function.

The delegates also visited an exhibition specially organized on the journey of 60 years of KVS. A short film on the Kendriya Vidyalaya was also shown during the function. Children of the Kendriya Vidyalaya presented cultural programmes that mesmerised everyone.

Shri Pradhan, while addressing the audience, congratulated the Kendriya Vidyalaya Sangathan for its Diamond Jubilee celebration and for providing quality education to the students for the last six decades. He also highlighted that Kendriya Vidyalaya is the laboratory for nurturing the multidimensional personalities of the children.

He mentioned that Kendriya Vidyalaya will work as a major factor in the development of the country and their role will be extremely important in realising the goal of making Viksit Bharat by 2047. Shri Pradhan also hoped that the schools would continue to provide their support in nation-building through education as per the needs of the 21st century and with the implementation of NEP2020. He added that students from Kendriya Vidyalayas will emerge as future thought and intellectual leaders.

Expressing confidence in KVS's leadership role in the coming 25 years, during Amrit Kaal, he advocated for the adoption of modern multidimensional approaches, aligning with NEP and advancements like Artificial Intelligence (AI).

Shri Sanjay Kumar in his address congratulated everyone associated with the Kendriya Vidyalaya and highlighted their efforts in the field of school education. Illustrious KV Alumni Smt. Deepa Malik, Para Olympian and Vice Air Marshal Manoj Kumar Mehra also addressed the gathering and shared their old school memories during the programme.

News18
 December 15, 2023, Web

केन्द्रीय विद्यालय संगठन की हीरक जयंती पर पीएम मोदी द्वारा रचित डांडिया की धुन पर थिरका पूरा सभागार

नई दिल्ली: नौसंध था केन्द्रीय विद्यालय संगठन की हीरक जयंती का वाती 60 साल पूरे होने का-केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धरमन्द्र प्रधान की मौजूदगी में दिल्ली संभाग के केन्द्रीय विद्यालयों के छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों का ऐसा सभा वाचा कि दिल्ली कैप्ट के केन्द्रीय विद्यालय नंबर 2 का सरोपन्वी सधाकृष्णन सभागार तलियाँ की शम्भुशहद से मूलतः रहा. इस सभागार कार्यक्रम की खास बात ये कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा रचित एक डांडिया के गीत को धुने में बाध कर छात्रों ने खूब डांडिया नृत्य किया. खास बात ये एक लो पीएम से जुड़ा गीत था और दूसरे केन्द्रीय विद्यालय के छात्रों ने इसे नृत्य-संगीत में बदल कर सचका दिन जीत लिया. वहीं गरी देश भर के सभी नृत्य कलाओं को भी मंच पर उतर दिनी के केन्द्रीय विद्यालयों के युवा छात्रों ने.

पीएम मोदी ने भी संगठन की हीरक जयंती के मौके पर रचित कर सभी छात्रों, शिक्षकों और पुराने छात्रों को बधाई दी. पीएम मोदी ने कहा ये गीत है जज्ञ मना कर इस संगठन की उपलब्धियों की तारीफ करते का बर्गोकि विछने लई दरगो में केन्द्रीय विद्यालय संगठन तें उच्च स्तरीय शिक्षा, छात्रों के सार्वजनिक विकास में अनुत्तनीय भूमिका निभायी है.

संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान अपने स्वतन्त्र कार्यक्रमों के बीच भी शिक्षा मंत्री धरमन्द्र प्रधान दिल्ली कैप्ट में स्थित इस पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय में आयोजित इस हीरक जयंती कार्यक्रम में पहुंचे. प्रधान ने 60 साल की केन्द्रीय विद्यालय की अमृतपूर्ण यात्रा की तारीफ करते हुए कहा कि पीएम नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत 2047 के सपने को पूरा करने में केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने पूरे देश को जीत करेगा.

केन्द्रीय विद्यालय एक प्रयोगशाला है

धरमन्द्र प्रधान ने कहा कि केन्द्रीय विद्यालय एक प्रयोगशाला है जहां बच्चों का सार्वजनिक विकास होता है. संसद में हुए दो युवा लड़कों की हस्तगत से आइए प्रधान ने कहा कि बच्चों को लडात होने हैं. उन्हें जैसे डाब्लोग, वैसे ही बन कर निकलने, इसलिए केवी संगठन तें शिक्षकों का आइएन होने हैं.

दिपिंट
 15 December, 2023, web

प्रधानमंत्री ने केन्द्रीय विद्यालय संगठन की हीरक जयंती पर बधाई दी

नयी दिल्ली, 15 दिसंबर (भाषा) प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को केन्द्रीय विद्यालय संगठन की हीरक जयंती के अवसर पर संगठन से जुड़े कर्मियों, छात्रों और शिक्षकों को बधाई दी और अकदमिक उत्कृष्टता तथा छात्रों के समग्र विकास के लिए इसकी सराफना की।

प्रधानमंत्री ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, "केन्द्रीय विद्यालय परिवार के सभी छात्रों, कर्मचारियों, सहस्यक कर्मचारियों और पूर्व छात्रों को इसकी हीरक जयंती पर बधाई। यह इस सम्भावित शैक्षिक समुदाय की उत्कृष्टता की उपलब्धियों का जज्ञ मनाते और प्रशंसा करने का अवसर है।"

उन्होंने कहा, "वर्षों से केन्द्रीय विद्यालयों ने कई छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके हमारे राष्ट्र के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अकदमिक उत्कृष्टता और छात्रों के समग्र विकास में इनका योगदान वास्तव में सराहनीय है।"

भारत सरकार द्वारा दूसरे केन्द्रीय वैतन आयोग की सिफारिशों के आधार पर केन्द्रीय विद्यालयों (सेटल स्कूल) की योजना का अनुमोदन तम्वर 1962 में किया गया।

शुरुआत में शैक्षिक वर्ष 1963-64 के दौरान सुरक्षा कर्मियों की संभालना जाने स्थानों पर पलाय जा रहे 20 रेजिमेंटल विद्यालयों वें केन्द्रीय विद्यालयों के रूप में स्थित गया। पदत दिसंबर, 1965 को सोसायटी रोजीकरण अधिनियम (1860 के XXI) के अंतर्गत एक सोसायटी के रूप में केन्द्रीय विद्यालय संगठन का रोजीकरण किया गया।

दैनिक जागरण
 Page no. 17
 16 December, 2023

देश-विदेश जागरण

राष्ट्र के भविष्य को आकार देने में केन्द्रीय विद्यालय महत्वपूर्ण : मोदी

नई दिल्ली: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को केन्द्रीय विद्यालय संगठन की हीरक जयंती के अवसर पर संगठन से जुड़े कर्मियों, छात्रों और शिक्षकों को बधाई दी और अकदमिक उत्कृष्टता तथा छात्रों के समग्र विकास के लिए इसकी सराफना की।

प्रधानमंत्री ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, "केन्द्रीय विद्यालय परिवार के सभी छात्रों, कर्मचारियों, सहस्यक कर्मचारियों और पूर्व छात्रों को इसकी हीरक जयंती पर बधाई। यह इस सम्भावित शैक्षिक समुदाय की उत्कृष्टता की उपलब्धियों का जज्ञ मनाते और प्रशंसा करने का अवसर है।"

उन्होंने कहा, "वर्षों से केन्द्रीय विद्यालयों ने कई छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके हमारे राष्ट्र के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अकदमिक उत्कृष्टता और छात्रों के समग्र विकास में इनका योगदान वास्तव में सराहनीय है।"

भारत सरकार द्वारा दूसरे केन्द्रीय वैतन आयोग की सिफारिशों के आधार पर केन्द्रीय विद्यालयों (सेटल स्कूल) की योजना का अनुमोदन तम्वर 1962 में किया गया।

शुरुआत में शैक्षिक वर्ष 1963-64 के दौरान सुरक्षा कर्मियों की संभालना जाने स्थानों पर पलाय जा रहे 20 रेजिमेंटल विद्यालयों वें केन्द्रीय विद्यालयों के रूप में स्थित गया। पदत दिसंबर, 1965 को सोसायटी रोजीकरण अधिनियम (1860 के XXI) के अंतर्गत एक सोसायटी के रूप में केन्द्रीय विद्यालय संगठन का रोजीकरण किया गया।



तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

हिःणमयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत् त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये॥

Once a
Always a **KV**ian!





The Memoirs of KVS Headquarters' Officials

Here they share their experiences and insights on their unique journey in KVS.



The Magical 11/12/13

A decade ago, this day, December 11, 2013, was magical, not only because it could be written as 11/12/13, but also because it was the day on which the adorable Dr. APJ Abdul Kalam, the former President of our nation, graced the Golden Jubilee Celebrations as Chief Guest at IITM Chennai. Everything associated with that event was magical.

Kendriya Vidyalaya Sangathan (KVS) came into existence in 1963 with the taking over of twenty Regimental Schools, which were initially called Central Schools and later renamed Kendriya Vidyalayas (KVs). Hence, it was decided to have yearlong celebrations marking this special milestone in the timeline of KVS. At the regional level in Chennai, we decided to invite Dr. Kalam to be the chief guest of the celebrations so that we could have his blessings and also get his suggestions/directions for our future.

I got a call from the PS to Dr. Kalam, asking me whether our invitation still stands and, if so, would 11/12/13 suit us since our request was made a few months ago. After consultation with the HQ, we conveyed our happiness to have Dr. Kalam amidst us. It was conveyed by the PS that Dr. Kalam desires to have the function at IITM Chennai. We immediately approached the director, who readily agreed to the proposal and immediately initiated action to prepare the venue for this event.

Thereafter, we started the micro-level planning, and in that, an important issue cropped up. Due to security reasons, entry to the venue had to be sealed one hour before the arrival of Dr. Kalam. Therefore, we had to have a program to engage the audience. An alumnus, Sh. Sashikiran, came forward to conduct a musical program with 200 students drawn from different KVs in the city. And he had a specific request. Dr. Kalam was fond of a particular composition by Saint Tyagaraja, and he wanted an opportunity to sing this one before him. Since December 11 is the death anniversary of the great Tamil poet Mahakavi Subramanya Bharatiyar, we decided to include his composition 'Odi Vilaiyadu Pappa' too. (This is among the many community songs being periodically sung by the students of KVs.) All these were approved by Dr. Kalam.

In the meantime, it was decided to invite all the principals in the region. Since all the principals would be attending, it was further decided to arrange a series of lectures by eminent personalities in different fields. The name of Dr. Kalam was so magical that every invitee accepted our request, and each of their deliberations with the principals turned out to be enriching for all of us.

When we went to invite the Director, IITM, to be a Guest of Honor, we learned that he would be out of station. But he already had a few review meetings with his officials for the preparation and had been inspecting the venue at his convenience. The day before the event, when we visited the event site, the carpenter who made a special stair of steps for the convenience of Dr. Kalam asked me personally to check by climbing through it. While making this request, what the carpenter said humbled me. I remember clearly what he said: "The last time Aiyya (equivalent to Sir in Tamil) visited the institute more than a decade ago, I erected the stair of steps. He used to climb very fast. But now he has grown older by 10-12 years, and so I do not want to take any chance with his comfort and safety."

On the magical day, everything was in place, and more than 2000 students, 1000 teachers, and other invitees assembled at the event site and were awaiting the arrival of Dr. Kalam. Exactly at the scheduled time, Dr. Kalam arrived and directly proceeded to the stage. As I entered the hall and walked through the audience, the entire hall stood up with a roaring applause. The thundering applause given to Dr. Kalam was an electrifying experience that goes beyond the description of words.



On the magical day, everything was in place, and more than 2000 students, 1000 teachers, and other invitees assembled at the event site and were awaiting the arrival of Dr. Kalam. Exactly at the scheduled time, Dr. Kalam arrived and directly proceeded to the stage. As I entered the hall and walked through the audience, the entire hall stood up with a roaring applause. The thundering applause given to Dr. Kalam was an electrifying experience that goes beyond the description of words.

Dr. Kalam appeared to be a little uncomfortable with the initial formalities of welcome. But when the team of musicians started rendering Saint Tyagaraja's composition, he appeared to have gone into a trance, his face beaming with a sense of bliss. For the next composition of Mahakavi Bharatiyar, his response appeared as though he had transformed into a growing kid. Then came his address, which was interactive and well received by the audience.

Once the event was over, he walked away to his car, and our request to have tea, coffee, or tender coconut water was politely declined by him. With his departure, everyone could feel a sudden sense of vacuum. After completing the formalities of winding up at the event venue, as we were walking down to the lecture hall, a couple of young girls studying in the primary section of the KV came running towards us and asked the teacher who was with us, "Ma'am, where is Kalam Sir?" She replied that he had left and had also been informed that the entire event had been recorded and would be played in the school the next day. But the two young girls were visibly unhappy as they responded, saying, "We just wanted to touch his feet and take his blessings, ma'am!"

Even after a decade, this experience is fresh in my mind, and the two lessons among the many that this event taught me are:

Every one, be it illiterate, highly literate, or just growing to become literate, is a true contributor who is well received and admired by everyone.

KVS continues to succeed in its cherished objective of developing a sense of Indianness in its students.

Jai Hind!

N R Murali
Joint Commissioner
KVS (HQ), New Delhi





KVS Shaping the Educational Landscape of Our Nation

It is my proud privilege that I am given the opportunity to pen something about an Organisation, that I have been a part of, as a student and as an administrator. And I do not take it lightly. It certainly is an opportunity of a lifetime!

KVS has taught me many things, mostly grand and mostly good. And I could not have been more grateful. Confining it into a few words would be a gross injustice, but here we are.

This grand organisation has seen the best and the most challenging, and it has lived and continued to impart what it was mandated to for 60 years and running. It continues inspiring and it continues encouraging!

What could be possibly ask more of! The many stakeholders that it houses, besides the very focus that it lives on - the KVians - have been manifold.

I am required today to put into words my thoughts and feelings into words and as you can imagine, it is not an easy task but not impossible nonetheless. KVS has shaped lives, including mine and countless others. And it has done exceedingly well, if I may say so. It has lived it's more than half a century, imparting education and knowledge in all corners of the country. This is a very wonderful nation. And whenever we learn of a KV doing well, we look up in pride and gratitude. Because KVS has unfailingly shaped the landscape of school education in our country in a better way, ingraining not only academics but also paying equal attention to the holistic development of a child to become a responsible and wholesome citizen of this country, shaping the future. I couldn't be prouder! It lives the very spirit of India, it culminates all cultures and translates it into something profound and beautiful. It culminates in the very spirit of what our country stands for - unity in diversity - in each microcosm of a KV. Each KV in each part of the country has a flavour to offer. Each unique, each diverse, that is what I have come to realise over time and it is wonderful!

And all I can say and wish and hope for is that it lives on, beyond you and me, on this grand path, because we know not where it will lead, but we do know it will not disappoint. There must be more KVS alumni than we can put our fingers into counting, diverse into fields of life that we can only imagine. And for that, we have to thank each KVian for putting their best foot forward. For keeping the fire alive!

Lastly, I can only quote, "Come here to learn, go out to serve." And I can say that KVS has lived up to that and continues...

Jai Hind!

Ajeeta Longjam
Joint Commissioner
Administration I
KVS (HQ), New Delhi



KVS The Forerunner

The Kendriya Vidyalaya Sangathan (KVS) Diamond Jubilee marks a significant milestone in the organization's journey, celebrating 60 years of educational excellence. Established in 1963, KVS with a network of schools spread across the country has played a pivotal role in providing quality education to the children of central government employees across India. The Diamond Jubilee is a testament to KVS's enduring commitment to fostering holistic development, promoting a spirit of inquiry, and nurturing future leaders.

Over the years, KVS has evolved, adapting to the changing educational landscape and embracing innovative teaching methodologies. The Diamond Jubilee is an occasion to reflect on the achievements, acknowledge the dedicated educators, and applaud the countless success stories that have emanated from KVS institutions. It also serves as an inspiration for continuous growth and advancement in the pursuit of knowledge and character building. As KVS enters this milestone, it stands as a beacon of educational empowerment, shaping the minds of generations to come.

This Diamond Jubilee is a significant occasion to reflect on KVS's transformative journey, highlighting its role in shaping the academic and holistic development of countless students. Over the years, KVS has adapted to evolving educational trends, emphasizing a modern and inclusive approach to learning.

The celebration underscores the dedication of KVS to fostering not just academic excellence but also being a forerunner in inculcating values and skills essential for the overall growth of students. As KVS looks back on its rich legacy, it stands as a cornerstone of educational empowerment, preparing students for the challenges of the future while celebrating the achievements of the past 60 years.

Feeling proud to be associated with this wonderful organisation I wish it all the success in all its future endeavours.

SN Gulia
Joint Commissioner (F)
KVS (HQ), New Delhi



My Experience in KVS

My journey in Kendriya Vidyalaya Sangathan (KVS) has been nothing short of a tapestry woven with memories, challenges, and continuous growth. Reflecting on my experiences, I can't help but be filled with nostalgia as I trace back to my first brush with Kendriya Vidyalaya as a student. It is filled with so many joyful emotions - memories of friends, classmates, teachers, Principals and incidents, as if it was just the other day. My earliest memory is of a class I student in Sec-31 Chandigarh. Primary classes were held in big tents provided by Air Force.

My next school was KV Adampur, Punjab. The school ground in the front was actually part of an Aerodrome and if we had a fall, knees & elbows would be scraped badly. We would not take the earlier bus meant for Primary children and instead played on the Patton tank (Pakistani tank disabled and captured) kept right outside the school gate. I fondly remember Air Force Bus trips to school. Winters were severe in Punjab and the bus would not start early in the morning. We used that time to play in the Park and reached school late, only when the sun came up. During recess we would go deep into the tall grasses growing, and then we would miss hearing the bell. Then someone would come to fetch us and we would get a scolding. Celebration of Sports day was a big event and we would practice march-past for days. There were mass PT displays and our class participated in PT display with Dumb-Bells. We had lot of opportunities to participate in co-curricular and sports activities and mass participation was the focus of all these activities. Curriculum was planned with objective of all round development of a child school days were such carefree days.

KV Amla has a special place in my journey as I grew up to be an adolescent and passed both classes 10 & 12 from there. Our class had students from different states of the country and right from childhood we imbibed the value of tolerance as we learnt different people have different language and cultures. We had classmates from different strata of society. Some parents were officers in Air Force, some Airmen and some civilians but it never mattered to us and we learned to appreciate the diversity within our school community I also very fondly remember the teachers, each with a unique teaching style and personality. They left an indelible mark on my education and character. In December 1993, I took a significant step in my professional life by joining KVS as a PGT Bio at KV 2 Army Jodhpur. I distinctly remember my first day of joining when I was to take charge of the Biology Lab and my exposure to so far alien word then Commissioner Ms. Lizy Jacob, IAS. Teaching became a passion, and the love and respect I received from students fueled my enthusiasm. Some of them are still in touch, placed in good positions and many are doctors.

Sh. H M Cairae, IAS joined as Commissioner KVS in the year 1998. This marked the beginning of an era of transformation for KVS. The introduction of VVN and the outsourcing of housekeeping services were groundbreaking decisions that addressed longstanding issues of fund crunch and campus cleanliness.

New editions of the Education code and Accounts code with handy Annexures to help Principals were printed. Transfer policy of teaching & non-teaching staff was revised. If I have to choose one decision that resulted in welfare of the staff in a major way it was shifting of Employee GPF accounts to RO's.

A major turning point in my journey was, when I was selected as Education Officer (now Assistant Commissioner) in Regional Office Jaipur in July 2003

I recall joining as EO in RO Jaipur knowing nothing about RO's functioning or my job profile but I received tremendous support, both from my superiors and my subordinates. I quickly realized that most meaningful way to contribute in my role would be sharing of best practices that I could observe during inspection of KVs. Also, giving due recognition to good teachers who are working very diligently, especially in smaller remote schools and giving them due recognition through Regional incentive awards. After working for 05 years as Education Officer in RO Kolkata, my contribution was duly recognized and I was given a posting in KVS HQ. Here I had to unlearn a lot of things and



got an opportunity to learn many new things. I still vividly remember when, for the first time I saw the signatures of cabinet minister ,Hon'ble HRM(earlier nomenclature for Shiksha Mantri) on the note sheet regarding cash awards to meritorious students , that had been prepared by me, I was thrilled and had an immense sense of achievement.

Then came another milestone in my professional journey. I was promoted to the post of Deputy Commissioner in April 2012 and was posted to ZIET Mumbai, one of the five training institutes under KVS. It was a big learning experience as the entire arena of training was opened to me. I enrolled for a Diploma in training through ISTD, New Delhi and because of it had deep insight into Training Function. During my tenure of 02 years, training programmes were organized for almost all cadres, from sub-staff to Deputy Commissioners. Almost all JCs, ADC Acad , Commissioner KVS and even the then Secretary Education visited ZIET Mumbai.

My next posting was in Raipur Region. It was again an enriching experience, visiting remotely located schools, learning about certain constraints unique to its location.

Then came Covid and brought in its wake a whole new set of challenges. It was a huge learning experience. School education was one of the most affected sectors, as minor children were involved and every decision had to be weighed thoroughly before implementation. At the same time, it was very satisfying as we were pushing boundaries -who would have thought that classes can be held virtually? Not only regular classes, we were organizing extra-curricular activities, Scout & Guide activities and many more like fitness and yoga. ICT was utilized very effectively to conduct training courses for teachers.

After the Covid period was over, I was posted to RO Kolkata and after a stint of one year, got promoted to the post of Joint Commissioner where I am presently working, heading the training division

As I continue this journey, I remain grateful for the opportunities, mentorship, and support that have been instrumental in my personal and professional growth within the vibrant tapestry of Kendriya Vidyalaya Sangathan.

Chandana Mandal
Joint Commissioner
KVS (HQ), New Delhi





Nurturing a Bright Future of the Country

Kendriya Vidyalaya Sangathan (KVS) has completed its 60 years journey, marking a significant milestone for all KVians. Since its inception in 1963, KVS has been dedicated not only to the field of education but also to various other sectors such as sports, dance, music, and more. With over 1250 KVs in India and three KVs abroad, the institution plays a crucial role in educating the children who are the future torchbearers of our nation. As a proud member of the KV family, I feel blessed to be a part of an institution that shapes the destinies of many.

Having joined KVS 30 years ago, I've witnessed the evolution and progress of this esteemed organization.

On December 15, 2023, we celebrated the 60 glorious years of KVS with immense zeal. The Minister of Education, Shri Dharmendra Pradhan, graced the occasion as the chief guest, along with other distinguished personalities and KV alumni. This was a memorable occasion for everyone.

Over the 60 years of its existence, KVS has undergone numerous transformative changes. These changes have not only been life-changing for the students but have also involved the training of teachers to provide excellent education. As a stakeholder in KVS for almost three decades, I have experienced firsthand positive impact of these changes, contributing to the overall growth and development of the institution. Having joined as a post graduate teacher, it has allowed me to grow and be elevated till the post of Joint Commissioner. The institution has not only been a beacon of light for students but for all the faculty and members of staff alike.

I wish a bright future to the great organization of our Country. May God bless it with innumerable successes in the times to come.

Dr. P. Deva Kumar
Joint Commissioner (Pers)
KVS (HQ), New Delhi





From Student to Deputy Commissioner The Transformative Journey

In childhood, whenever I used to hear about the arrival of the teacher at the school, I did not know why, but all my happiness would get shattered into pieces like a stormy spray! The reason may be understood by every child because for a child, the playground is the textbook, and friends mean the beautiful world full of teasing, taunting, upbraiding, and sometimes kicking too, and these were the important lessons of life in childhood days.

Gone are those beautiful days brimming with fun and pleasure. The day my teacher would take leave for one reason or the other, I used to pray, "Oh God! Why can't they declare seven days of holiday in school apart from summer and winter holidays?" Textbooks and I happened to be nearly poles apart then!

Often, I used to think school should be a place like a temple where no books should be there. In my school days, I never dreamt, even in the wildest of dreams, to be a teacher in life! Days passed, and I was annoyed with the school and the school teacher, but adored his beautiful handwriting because his handwriting was truly incredible.

A tiny curiosity and inclination erupted towards the noble profession of teaching when my elder brother started tuition classes in the village. He used my study room for it. Praise, appreciation, and respect were showered on him by the villagers as if he were a monk. Even my father would be appreciated by the villagers regarding my elder brother's teaching.

I was in a catch-22 situation. I summoned all my strength and told my father that I would like to be a teacher. The moment I declared it, my family members and my cousins all started laughing uncontrollably, and I felt dejected. I shed tears not because my words were not given due respect but because I was the youngest member of the family. Being the youngest member of the family, I think all orders of the King (father) and powerful princes (siblings), are to be obeyed without arguing like a Senapati.

Though my desire was not taken seriously by my family members, my inner urge did not allow me to sleep, and the journey of the teacher started thereafter. The journey of teaching started much earlier when I was in ninth grade, as I would often teach kids. Initial hiccups were plenty because I was considered the most notorious fellow in the village.

Days passed. Years passed. The urge to become a teacher doubled. I became a teacher two decades ago, in 2001. But the journey of a teacher is tough and also consists of herculean tasks. This noble profession does not allow teachers to relax, even on weekends. The reason is best known to all teachers.

Whatever work I did, these thoughts always kept playing in my subconscious: What am I going to teach the next day? How do I start the lesson or topic? Whether students will be able to understand the lesson? Whether the adopted method of teaching helps my students? What questions will I ask while introducing the topic? What teaching aids will I use so that my children can understand the concept? How can I be different from other teachers? Such a volley of questions would not allow me to relax, even on Sundays.

After teaching for eleven years as a teacher in different Jawahar Navodaya Vidyalayas, in 2012, I joined as a principal in this unique and renowned organization- Kendriya Vidyalaya Sangathan. Frankly speaking, I was completely speechless while entering the school on my first day. A six-story circular building, I mean, the market complex, with most of the subject teachers on a contractual basis except for the creative teachers (the teaching art, games, work experience), and the building was laden with loads of dust due to the bus stop in the vicinity. Adding to that used to be the honking of horns of the vehicles, like a constant source of shrill music deafening the ears of the entire school family. Many a time the voice of the teacher was almost lost due to the loud noise in the market nearby.



The journey of a principal in KVS is no less than walking on the Damocles sword. For the first month, I was in a dilemma about whether to continue as the school head or to leave the current responsibility. Despite all odds, some students were outspoken and communicative. All my issues subsided when I started teaching them, and many a time their answers and queries made me awake day in and day out. A warm welcome by the school captain,

Roshmi, not only put me on my toes all the time, but also the smile of the children of the school made my days joyful despite innumerable odds. Often, we make promises to keep, but only when we keep up those promises do we win the trust of others. During the morning assembly on 18th October 2012, I made a vow before more than three hundred odd students to shift the school to a new building in two years. I was not aware of the complex procedures and formalities involved in the construction of the building. So, after two years, only the foundation stone was laid. The students started asking me about the target of two years. Like a politician, I was also asked a volley of questions, not by teachers and parents but by my students. However, the building was constructed in record time.

The school was shifted to the new building. I was glad that praise, appreciation, and accolades were showered on me. But the efforts made by the then chairman of the KV were truly praiseworthy. His unwavering support, commitment, and dedication to the people made him unique!

Being the school head—I mean, Damocles's sword—hangs on me for multiple reasons since the school head has to light the path for others. It is often observed that a teacher's job is tough. After becoming school head, it becomes tougher. After a few years, when I led a region, I understood that leading is even tougher. I was thinking that the job of the regional head would be easy because the head has to give directions only. Friends, frankly speaking, the Regional Head has to spend many sleepless nights when he has to take action against any employee. Administrative action is to be taken against someone who acts against the interests of the organization. People think it is easy, but I think an administrator often has to play the role of a judge in a court to make formidable decisions.

The journey of a teacher in the KVS HQ is even more difficult. The moment I got the letter to be in the KVS HQ, I understood that my passion for teaching would be snatched. Because a teacher who wants to talk with teachers and students in class will have to spend his time with files and files only. Frankly speaking, Files and I are poles apart. But often I tell my colleagues and subordinates, "There is life in a file; please handle it carefully!" Of course, since the organization deals with human beings, files may carry certain important documents about a child, a teacher, an employee, a school head, or an officer. The KVS HQ is the toughest place to work. But it is an open secret that for the employees of the KVS HQ, it is a learning hub. Here, every day we learn something new. Lessons are beyond textbooks. Further, the lessons learnt here are unforgettable. For me, from an angry young man to a calm person (I think so, but my colleagues and subordinates may not agree with me) is possible only in the HQs. It taught me humility, work ethics, work culture, and continuous study.

Being a young entrant and having spent only one decade in this renowned organization, I can say with great pride and honour that students and teachers are the jewels and they will lead the country in the forthcoming days. The journey is never-ending and ever-growing. It will grow, prosper, and excel because the team is headed by incredible teachers and amazing students. Reaching space to filmmaking, leading in the corporate sector, guiding others as cabinet ministers, and winning prizes both in the national and international spheres to make strides in different fields have been conquered by the students. No doubt, challenges, and issues may crop up often but this will be a light-house for my country. It will surely revolutionize the school education. KVS will excel in innovation and experimentation for greater cause in days ahead like IITs and IIMs. It will also lead to giving wings to fly to its teachers and children. Salute to this unique journey of an organization that stands like a light-house for others.

I would surely carry on my role as a small squirrel in this great Sethubandh of education.

B. K. Behera
Deputy Commissioner (Acad)
KVS (HQ), New Delhi



KVS Diamond Jubilee 60 Years of Empowering Indian Education

I am pleased to learn that Kendriya Vidyalaya Sangathan, New Delhi, is celebrating the “Diamond Jubilee” of its inception and is bringing out a souvenir to commemorate a wonderful journey. Kendriya Vidyalaya Sangathan is the biggest organization in the field of education.

Education is vital to a prosperous society. Holistic learning is imperative for an empowered, liberal, and rich society. Quality and excellence are the hallmarks of this organization in delivering its unique objectives. KVS initiates and promotes experimentation and innovations in education in collaboration with other bodies like the Central Board of Secondary Education (CBSE) and the National Council of Educational Research and Training (NCERT), etc., to develop the spirit of national integration and create a sense of “Indianness” among children.

I humbly acknowledge the services of all dedicated leaders, officers, and staff that have rendered their dedicated services since the Kendriya Vidyalaya Sangathan was established in 1963 and have achieved the greatest heights in the field of education now, 2023. Completing his Diamond Jubilee (60 years) is recorded as a history of upliftment of the children’s of India through pouring the Indian values from the school at the initial stage with effortless intelligence and dedication to show case as an Indian citizen for the country.

On the occasion of the Diamond Jubilee of KVS, I heartily extend my best wishes and blessings to the coming new generation to take over the charge of achieving more and more laurels for the organization as Kendriya Vidyalaya Sangathan and for the country as a whole.

Neelam
Deputy Commissioner (Admin)
KVS (HQ), New Delhi



शिक्षा के क्षेत्र में 60 वर्षों का अद्वितीय सफर

केन्द्रीय विद्यालय संगठन द्वारा पिछले 60 वर्षों में हासिल की गई उपलब्धियों ने इसे अपनी श्रेष्ठता की ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। 20 विद्यालयों के साथ प्रारंभ हुआ केन्द्रीय विद्यालय संगठन आज भारत की सबसे लोकप्रिय विद्यालय श्रृंखला बन गया है।

के.वि.सं. की स्थापना 15 दिसम्बर 1963 को हुई, और इस अद्वितीय संगठन ने शिक्षा के क्षेत्र में अपनी निष्ठा और सेवाभावना के साथ स्वयं को निरंतर साबित किया है। यह संगठन विभिन्न क्षेत्रों में विद्यालयों को संचालित करने के लिए जाना जाता है, जहां विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान की जाती है।

सर्वविदित है समृद्ध समाज के लिए शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है। एक सशक्त, उदार और समृद्ध समाज के लिए समग्र शिक्षा अनिवार्य है। अपने अद्वितीय उद्देश्यों को पूरा करने में गुणवत्ता और उत्कृष्टता इस संगठन की पहचान है। के.वि.सं. राष्ट्रीय एकता की भावना को सुदृढ़ करने के साथ शिक्षा में प्रयोग और नवाचारों को बढ़ावा देता रहा है। इन 60 वर्षों की यात्रा के दौरान अपने विद्यार्थियों में 'भारतीयता' की भावना विकसित करने का मूल उद्देश्य केन्द्रीय विद्यालय संगठन के लिए सदैव सर्वोपरि रहा है।

किसी भी संस्थान को आगे बढ़ाने में उसका वित्तीय प्रबंधन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। गत 60 वर्षों में वित्तीय प्रबंधन के क्षेत्र में भी अनेक नई पहलें और नवाचार किये गए हैं। लेखांकन विधि में बदलाव, लेखांकन मानकों को अपनाने से लेकर ऑनलाइन फीस कलेक्शन, डिजिटल पेमेंट, पीएफएमएस और ई-पेंशन तक, समय के साथ हर नवीन पहल को केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने आत्मसात किया है।

मैं, उन सभी अधिकारियों और कर्मचारियों की सेवाओं को नमन करता हूं, जिन्होंने 1963 से लेकर अब तक अपनी समर्पित सेवाओं के माध्यम से संगठन को नित नई ऊंचाइयों प्रदान की। हरिक जयंती के अवसर पर, मैं केन्द्रीय विद्यालय संगठन में कार्य कर रही भारती पीढी को अनेक शुभकामनाएं देता हूं और आशा करता हूं कि अपने शताब्दी वर्ष तक केन्द्रीय विद्यालय संगठन विश्व की सर्वश्रेष्ठ स्कूल श्रृंखला में गिना जाएगा।

संजय कुमार
उपायुक्त (वित्त)
कें. वि. सं., नई दिल्ली





***The Memoirs of
KVS Region Officials***



Taj Mahal, Agra



Education is Vehicle of Social Change

I embarked on my journey in KVS in 2000 as a teacher. Work culture of KVS always enlivened my spirit to get classroom turn into breeding ground for fecund thoughts that led to a greater joy in elevating the minds to positively metamorphose the lives of many aspirants and satiate my passion to contribute to social milieu. In 2010, as Principal, I managed to grasp the managerial expertise with Steller vision and unflinching support of the proficient mentors.

In 2012, as an Assistant Commissioner, I was fortunate to have had a steep learning curve through visits to various places and also got invaluable insight in spiritualism. Working in difficult situations gave me lessons to transcend all impenetrable boundaries. I further got horizon of my administerial and managerial skills extended, in 2018. In 2019, I, as Deputy Commissioner in regions tried to bring radical changes in base level to ennoble and civilize power of education. KVS has strengthened my faith in the concept of "Education is vehicle of social change".

Shaik Tajuddin
Deputy Commissioner
KVS Agra Region





Hutheesing Jain Temple, Ahmedabad



KVS RO
AHMEDABAD

विद्यालयी शिक्षा का सिरमौर केन्द्रीय विद्यालय संगठन

भारत सरकार द्वारा दूसरे केन्द्रीय वेतन आयोग की सिफारिश वर्ष 1963 में सुरक्षा कर्मियों द्वारा सघन क्षेत्रों में चलाए जा रहे बीस रेजीमेंटल स्कूलों के अधिग्रहण के साथ शिक्षा के क्षेत्र में जो पौधा लगाया गया था, वह पौधा आज विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में एक विशाल वृक्ष का रूप ले चुका है जिसकी छाँव में देश-विदेश में फैले 1255 विद्यालयों में लगभग 14 लाख से अधिक विद्यार्थी विद्यालय स्तर की शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में गुणवत्तापूर्ण विद्यालयी शिक्षा प्रदान करना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि विद्यालयी शिक्षा एक विद्यार्थी के जीवन और उसके भविष्य को एक समुचित आकार प्रदान करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों अर्थात् पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर पर समावेशी व समान गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रणाली का होना आवश्यक है। केन्द्रीय विद्यालय संगठन विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों पर विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर उनके चहुँमुखी विकास के लिए निरंतर प्रयास कर रहा है। नई शिक्षा नीति -2020 के क्रियान्वयन के तहत केन्द्रीय विद्यालयों में पूर्व प्राथमिक शिक्षा का समावेश भी शैक्षणिक स्तर 2022-23 से बालवाटिका कक्षाओं के संचालन द्वारा सुनिश्चित किया जा रहा है। प्रायः यह देखा जाता है कि प्राथमिक कक्षाओं में कई बच्चों में पढ़ने, लिखने और संख्यात्मक योग्यता के बनुयादी कौशल की कमी रह जाती है लेकिन केन्द्रीय विद्यालयों में NIPUNBHARAT लक्ष्य के तहत केन्द्रीय विद्यालयों में गतिविधि आधारित शिक्षा प्रणाली के तहत विद्यार्थियों के मध्य FLN को सुनिश्चित किया जा रहा है जिससे विद्यार्थी प्राथमिक स्तर पर उचित शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। गतिविधि आधारित शिक्षा के तहत केन्द्रीय विद्यालयों में विद्यार्थियों को अंतःसंवाद (इंटरैक्टिव) और नवाचारी शिक्षण, बोलने, सुनने और रचनात्मक सोच के पर्याप्त अवसर प्रदान किए जाते हैं जो विद्यार्थियों को उनके सर्वांगीण विकास में सहायता प्रदान करती है।

विद्यार्थियों के चहुँमुखी व सर्वांगीण विकास के लिए विषयपरक शिक्षा के साथ-साथ सह पाठ्यक्रम गतिविधियों एवं खेल-कूद प्रतियोगिताओं का समावेश भी बहुत आवश्यक है। ये गतिविधियां विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के विभिन्न पहलू जैसे बौद्धिक विकास, भावनात्मक विकास, सामाजिक विकास, नैतिक विकास और सौंदर्य विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। केन्द्रीय विद्यालयों में विद्यार्थियों के लिए उनकी क्षमता व रुचि के अनुरूप विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, खेलकूद, कौशल से संबंधित प्रतियोगिताओं का निरंतर आयोजन किया जाता है जिससे उन्हें संभागीय व राष्ट्रीय स्तर तक अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का मौका मिलता है।

शिक्षक, जो विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है, के व्यावसायिक विकास के लिए केन्द्रीय विद्यालय संगठन द्वारा निरंतर सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं कार्यशालाएं आयोजित कर उन्हें पारंगत किया जाता है ताकि वे विद्यार्थियों को समुचित शिक्षा प्रदान कर सकें और विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में केन्द्रीय विद्यालय संगठन का मुकुट सदैव चमकता रहे।

श्रुति भार्गव
उपायुक्त
अहमदाबाद संभाग





Bengaluru Palace



Journey of KVS

Standing on the threshold of sixty illustrious years, Kendriya Vidyalaya Sangathan (KVS) proudly stays regally in the realm of education, casting a profound impact on the educational landscape of India. The organization began on a very humble note in the year 1963- to impart a standardized education to the wards of Central Government employees. The following years saw KVS schools unfurl their scholastic banner and herald a new era of academic excellence.

While looking back, one is overwhelmed by the rapid and impressive growth of KVS - of over 1255 schools in India and three schools abroad. Today, the halls of learning reverberate with the eager and enthusiastic footsteps of more than 4 million students. The organization, through inclusivity, embraces those who are sidelined and harmoniously weaves the diverse threads into hues of national unity- providing a glimpse of mini-India in every classroom.

KVS has always been an ardent torchbearer of innovation, embellishing the educational landscape with pioneering curricula and various innovative programmes. KVS has left an indelible mark in Computer Education and Artificial Intelligence, building scientific temperament, promoting physical and mental health, and in sporting prowess. Through activities like Scout and Guides and NCC, the organization has nurtured self-reliance and instilled a sense of responsibility. The KVS star-studded alumnus is a validation of sculpting conscientious citizens through its multifarious activities.

KVS takes pride in being a beacon of excellence, constantly nurturing young minds and tirelessly striving to foster holistic development by drawing inspiration from its rich culture, tradition and heritage and grooming children to become the pioneers of modern Atmanirbhar Bharat transcending all challenges to become a role model for the rest of the world to emulate and look upto.

The journey of KVS is replete with milestones – be it expanding its educational dominion to encompass the far-flung areas like Andaman and Nicobar Islands, Lakshadweep, Chandigarh, Dadra & Nagar Haveli, Daman & Diu, and Jammu & Kashmir or be it the transformative endeavors like launching the Kendriya Vidyalaya Digital Learning Initiative (KVS-DILI) and the Kendriya Vidyalaya E-Governance System (KVS-E-GS).

Undoubtedly, KVS stands as an invaluable asset to the Indian education system. May it continue to illuminate the path of enlightenment, steadfast in its pivotal role as a harbinger of knowledge, innovation, and wisdom.

Dharmendra Patle
Deputy Commissioner
KVS Bengaluru Region





Chaman Mahal, Bhopal



Not Just Tuition, But Intuition

If someone asks, what is unique in KVs that stands out when compared to all other educational institutions, the answer will be KVs focus on all round development of students rather than just making them score high marks in examinations. Whatever is the level of academic performance of students in KVs; the students become successful and get appreciated for their grooming, social and emotional skills; and positive qualities.

The reason for this is the way the curriculum is organized and integrated in their lives right from early education. To start, a seemingly routine activity such as the morning assembly is proved to be a great learning platform for all students.

Students from Class 1 come out with their efforts to give a successful morning assembly with the prayer song, pledge, thought for the day and special program for the day and so on. That it is done every day by involving all students throughout the year induces qualities of planning, performance, spiritual values, team efforts and leadership qualities.

Secondly, the importance given to reading, art education and sports education in KVs that play viral role in the growth of KV students. NEP 2020 stresses on reading skills, art integrated education and sports integrated education. All these 60 years, KVs are doing a silent revolution in bringing out the hidden potential of students with the sincere efforts of Librarian, Art teacher, Sports teacher and Music teachers in KVs. A beautiful blend of music, books, arts and sports make the students days joyful and emotionally rich.

Thirdly, the activities that starts for fun, leads to better skilling and ultimately give chances for regional and national level achievements. Yes, KVs have not only produced academically very successful IAS officers, officers in defence forces, scientists, business men and the like but the more challenging Olympic sports persons, film stars and renowned musicians who leave their unique mark in enhancing the image of our country in their chosen fields. Of late, Regional and National level Sports Meet, EBSB, Youth Parliament, Kala Utsav, and Science Congress etc. are the platforms that KVS provide as State for its students that act as spring board for such talents.

Learning three languages and being in the environment surrounded by multiple language speaking populations adds to this social upbringing. Learning Sanskrit is an opportunity for all KVians to get in touch with our spiritual roots in Bharat. From class 6 to 8, all students learn Sanskrit which is one of the Classical languages and they continue in 9 to 12 if they want to grasp deeper. All students are comfortable

with English and some each class they get to mingle with students from different states from Class 1 teaches the diverse culture of our country and ensures broad mindedness and celebrates diversity. While standing in the morning assembly of KV Tamenglong in Manipur or KV Champai in Mizorum, one can hear the inner echo of the KV prayer song from KV Rameswaram or KV Kavaratti. The prayer "Ashothoma, satgamaya..." really reverberates in our hearts in appealing to God Almighty to lead us in the path of spirituality. No doubt, KVs not just stop with tuition, but greatly nurtures intuition.

R. Senthil Kumar
Deputy Commissioner
KVS Bhopal Region





Lingaraj Temple, Bhubaneswar



My Journey in KVS From Train Windows to Principal's Office

In the year 1984, I took admission in RIE Bhubaneswar to pursue B.Sc. (Hons.), B.Ed. While travelling from Tatanagar to Kharagpur by local train I use to see a building being constructed nearer to Kalaikunda station. Few of my friends in RIE have done their schooling from KV Kalaikunda. In the year 1988 the sign board of the building read KV No.2 Kalaikunda. Established in the year 1984, the school shifted to its permanent building in the session 1988-89. I really saw the KV growing as that was my route of going home. After working for almost 16 years as PGT Chemistry in NVS, I have qualified for the post of Principal in KVS in the year 2009 and to my surprise I was posted in KV No.2 Kalaikunda in Kolkata region. It was my pleasure to work in the KV as Principal which I used to see from the window of the train since its inception.

In the final year of my four-year integrated course in RIE, I got the chance to go to KV No.1 Bhubaneswar to undergo one-month internship programme. That was for the first time I entered a class room in KV. Today when I go to KV No.1 Bhubaneswar, I feel nostalgic remembering my days of our first teaching classes.

Having spent in KVS for more than 14 years, I felt that I have got the opportunity to work in a stress-free environment & without any pressure from my higher officers.

Dr. Shiharan Bose
Deputy Commissioner
KVS Bhubaneswar Region





Sukhna Lake, Chandigarh



Education is the passport to the future, for tomorrow belong to those who prepare for it today

My journey into the exciting and wondrous world of teaching started in the year 2000, when I joined Kendriya Vidyalaya Sangathan as a Post Graduate Teacher at Kendriya Vidyalaya No. 3 Baad, Mathura.

Over the past two decades, as an employee in various capacities- Teacher, Principal, Assistant Commissioner and now as Deputy Commissioner—I have witnessed a transformative evolution in school culture. Traditional pattern has given way to a more holistic approach, fostering creativity and critical thinking in students.

I have seen a notable shift towards Project-based Learning, encouraging students to explore real world application of knowledge. I have seen extra-curricular activities being converted to co-curricular and now all as part of curricular activities. FLN, NIPUN Lakshyas, learning outcome-based education, EBSB, Games & Sports, student led initiatives, such as clubs and forums STEM exhibitions all engage students actively in critical thinking and the decision-making process. There is a heightened awareness of inclusivity and diversity. The focus on student well-being has become paramount, with increased emphasis on mental health support and counseling services.

I have been a witness to the evolving role of teachers, from simply teaching to being facilitators, guiding students through interactive lessons and in the process, instilling qualities of empathy, leadership and social responsibility.

COVID-19 pandemic-led technological advancements have brought about a paradigm shift in education, integrating digital tools into the learning process. Online platforms and virtual classrooms have brought in blended learning environment and now, both teachers and students have become tech-savvy, enhancing accessibility and flexibility in our system.

Collaborative learning has gained prominence, preparing our students, as global citizens, to be ready for an inter-connected world.

As I look back and reflect on the journey of KVS from 20 regimental schools to its golden jubilee in 2013 and its movement forward to celebrating its diamond jubilee, I am filled with a sense of pride and satisfaction in being part of an organization that has held steadfast to its commitment of nurturing well-rounded individuals, equipped to face any challenges that lie ahead.

Preeti Saxsena
Deputy Commissioner
KVS Chandigarh Region





Valluvar Kottam, Chennai



A Glimpse into the Journey of KVS

A Saga of Excellence and Transformation in Education!

The remarkable journey of KVS, spanning over six decades, is a testament to the organization's unwavering commitment to fostering academic excellence and holistic development. Over the years, KVS has established itself as a pioneer in the field of education, consistently delivering quality education that has empowered generations of students to excel in various fields. The organization's commitment to a holistic approach to learning that goes beyond text books has nurtured students not only academically but also in co-curricular activities, sports, and value education.

KVS has been a pioneer in promoting national integration and unity. The organization's diverse student body and its emphasis on cultural exchange programs have fostered a sense of shared values and respect for India's rich heritage among students. KVS has also played a significant role in promoting environmental awareness and sustainability initiatives.

KVS has not only expanded its physical presence but has also embraced technological advancements to enhance the teaching-learning process. The organization has actively integrated digital technology into classrooms, providing students with access to interactive learning resources and digital tools. KVS has also been at the forefront of pedagogical innovations, adopting new teaching methodologies and implementing initiatives to promote active learning, critical thinking, and creativity among students. The organization's focus on continuous professional development for teachers has ensured that they remain at the forefront of educational practices.

KVS's impact on India's future is evident in the success of its alumni. KVS has produced countless individuals who have made significant contributions to various fields, including science, technology, engineering, medicine, and the arts. These alumni have become leaders in their respective fields, shaping India's economic, social, and cultural landscape.

KVS stands tall as a beacon of hope and inspiration, illuminating the path for generations of students to come. Its commitment to excellence, its dedication to fostering national integration, and its unwavering belief in the potential of every child will undoubtedly continue to shape the future of India.

D Manivannan
Deputy Commissioner
KVS Chennai Region



Har Ki Pauri, Haridwar





Traveling Down Memory Lane

Joining the Kendriya Vidyalaya Sangathan (KVS) 28 years ago marked the beginning of an extraordinary venture—one filled with honor, pride, and a deep commitment to excellence. As I stand here reflecting on this voyage, I'm reminded of the transformative changes that have not only shaped the institution but have also left an indelible mark on my own personal and professional life.

KVS has been more than just a workplace—it has been a living, breathing entity that has evolved over time, much like my own experiences alongside it. Over these 28 years, from starting in this organization as a teacher to being a Deputy Commissioner today, I have witnessed changes that may have seemed small at first but, collectively, have propelled us towards excellence. From the classic blue and white uniform to the contemporary multichecked grey attire, from days of manual fee collection in classrooms to smart fee collection at banks, from the use of typewriters in the Vidyalaya office to the digitized wonder of smart classrooms, the updation of curriculum, transformation and innovation in pedagogy, the use of ICT, inclusive education, the development of modern infrastructure in Vidyalaya, and many more—these changes reflect not just progress but a commitment to staying at the forefront of education. Various flagship programs and pilot projects adopted and experimented with at different times have been instrumental in shaping the organization the way it is today. The journey has been a mosaic of experiences and has helped me grow not only as an academician and an administrator but also as a human being. Moving and working across the country for the last 28 years has been instrumental in fostering a cosmopolitan outlook.

As KVS marks its diamond jubilee, it's not just a celebration of the past but a gaze into the future. The impact of KVS extends far beyond national borders. What started as a means of providing quality education for defense and paramilitary personnel has grown into a cornerstone of educational excellence, even in the remotest corners of the country. KVS has not only educated minds but is also preparing students to be global citizens with acceptance of myriad cultures and languages. And what a pride it has been to be a small yet significant part of this remarkable legacy!

In 60 years, KVS has beautifully blended tradition with modernity, creating a legacy that extends beyond the walls of classrooms. The diamond jubilee is not just a culmination but a stepping stone to the next chapter, where KVS continues to transcend boundaries and shape minds. The familiar melody of the KVS anthem, "Bharat ka Swarnim Gaurav Kendriya Vidyalaya Layega," continues to echo through the corridors, inspiring future generations while evoking nostalgia and a sense of belonging in every alumnus. Only a KVIAN knows what it feels like to be a KVIAN. And I stand ready to further contribute and shape the chapters yet to unfold in this remarkable odyssey.

Here's to 28 years of memories, growth, and the everlasting legacy of Kendriya Vidyalaya Sangathan!

Dr. Sukriti Raiwani
Deputy Commissioner
KVS Dehradun Region





Bharat Mandapam, Delhi



विकसित भारत की यात्रा में केन्द्रीय विद्यालय संगठन का योगदान

सन् 2047 तक भारत एक विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित होगा। अर्थशास्त्रियों के मतानुसार, भारत की अर्थव्यवस्था का आकार 2047 तक लगभग तीस ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के समतुल्य होगा। विकसित भारत की यह प्रगति यात्रा अगले 25 वर्षों में पूर्ण होगी। भारत के दूरदृष्टा प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने सन् 2023 से 2047 की इस महत्वपूर्ण अवधि को अमृतकाल की संज्ञा दी है। विकसित भारत यानि, गरीबी, अशिक्षा, अज्ञान, अंधविश्वास, अन्याय, शोषण, भेदभाव, असुरक्षा, अभाव से मुक्ति और सर्व सुलभ सुविधाओं, व्यवस्थाओं, सेवाओं एवं संस्थाओं की उपलब्धि है।

यह सब, तभी संभव होगा जब देश का प्रत्येक नागरिक शिक्षित, ज्ञानवान और गुणवान होगा। किसी देश की प्रगति और उन्नति उस देश के नागरिकों की क्षमता और गुणवत्ता पर निर्भर करती है। एक सक्षम व्यक्ति ही देश की समृद्धि और सशक्तिकरण में अपना भरपूर योगदान दे सकता है। देश तब तक विकसित नहीं बन सकता जब तक उसका एक भी नागरिक अशिक्षित, सामर्थ्यहीन और अभावग्रस्त रहेगा। यह तथ्य भी सर्वविदित है कि अच्छी शिक्षा ही सकारात्मक परिवर्तन का मूल कारक है। देश का हर एक बच्चा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करे और उसमें अंतर्निहित नैसर्गिक प्रतिभा का पूर्णरूप से विकास हो इसके लिए सर्वस्पर्शी और जनसुलभ, सम्यक् शिक्षा व्यवस्था को विकसित करने की नितांत ज़रूरत है।

वर्तमान में भारत की जनसंख्या लगभग 140 करोड़ है जिसमें लगभग 33 करोड़ विद्यार्थी हैं। भारत में शिक्षा समवर्ती सूची का विषय है इसलिए केंद्र और राज्य सरकारें अपने अपने स्तर पर शिक्षा प्रदान करने के लिए यथासंभव प्रयास करती हैं। केंद्र सरकार जवाहर नवोदय और केन्द्रीय विद्यालयों के माध्यम से देशभर में विद्यालयी शिक्षा प्रदान करती हैं। नवोदय विद्यालय जहां ग्रामीण क्षेत्र की प्रतिभाओं को शिक्षा प्रदान करते हैं वहीं केन्द्रीय विद्यालय अपने 1255 विद्यालयों के माध्यम से देशभर में स्थानांतरित होने वाले केन्द्रीय कार्मिकों के बच्चों, अनुसूचित जाति, जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग तथा आर्थिक रूप से पिछड़ा वर्ग के बच्चों को गुणवत्तापरक शिक्षा प्रदान करने का उपक्रम कर रहे हैं। वर्तमान में केन्द्रीय विद्यालयों में लगभग पंद्रह लाख विद्यार्थी शिक्षारत हैं।

केन्द्रीय विद्यालय संसाधनों की दृष्टि से देश में सर्वाधिक सम्पन्न सरकारी क्षेत्र के विद्यालय हैं जहां विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की संकल्पना के आधार पर पठन-पाठन की प्रक्रिया को संचालित किया जा रहा है। यह विद्यालय स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे नवाचारों एवं अभिनव प्रयोगों के लिए भी एक प्रयोगशाला की तरह कार्य करते हैं। केन्द्रीय विद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को प्रभावी ढंग से क्रियान्वित कर रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में वर्णित विषयों जैसे आरंभिक बालपन में देखभाल और शिक्षा [Early Childhood Care and Education], मौलिक साक्षरता एवं अंकगणितीय योग्यता [Fundamental Literacy & Numeracy], बालवाटिका कक्षाएं, वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर विषय चुनने की स्वतंत्रता, दक्षता आधारित शिक्षा, अधिगम आधारित पठन-पाठन, दक्षता आधारित मूल्यांकन प्रणाली का विकास आदि केन्द्रीय विद्यालयों में सुचारु ढंग से लागू किया जा रहा है।

केन्द्रीय विद्यालय अकादमिक श्रेष्ठता के साथ-साथ खेल, संगीत, कला, सूचना प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, कम्प्यूटर विज्ञान जैसे विषयों के माध्यम से विद्यार्थियों में कौशल विकास पर बल देते हैं। यह विद्यालय अन्य विद्यालयों के लिए एक आदर्श विद्यालयों का प्रतिमान भी प्रस्तुत कर रहे हैं।

आने वाले 25 वर्षों में केन्द्रीय विद्यालयों की संख्या में आशातीत वृद्धि होने की पूर्ण संभावना है। भारत के सभी केन्द्रीय संस्थानों, उपक्रमों, विभागों और दूरस्थ भौगोलिक क्षेत्रों में इनकी स्थापना द्वारा यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि अधिकाधिक छात्र-छात्राओं को गुणवत्तापरक शिक्षा प्राप्त करने के अवसर प्राप्त हों। वर्तमान में भारत में 806 जिलों में 7015 ब्लॉक हैं। बैंकिंग, यातायात, सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि आयात केंद्र, मंडी, सहकारिता केंद्र, डेयरी फार्म, भंडारणगृह आदि के विकेंद्रीकरण और सार्वभौमिक विस्तार से प्रत्येक स्थान पर राजकीय कार्मिकों की पर्याप्त संख्या में नियुक्ति और वृद्धि होगी जिसके परिणामस्वरूप अच्छे स्कूलों की आवश्यकता होगी। इस माँग की पूर्ति के लिए कम से कम 10,000 केन्द्रीय विद्यालयों की ज़रूरत होगी। प्रत्येक विद्यालय के आकार और क्षमता में भी वृद्धि करनी होगी। औसतन एक केन्द्रीय विद्यालय में 3000 विद्यार्थियों के लिए शिक्षा ग्रहण करने की क्षमता विकसित करने से लगभग तीन करोड़ विद्यार्थी इन विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर सकेंगे। रक्षा, वैज्ञानिक शोध, प्रशासन, विज्ञान, प्रबंधन, शिक्षा, विधि, खेल, समाजसेवा, चिकित्सा, कम्प्यूटर, अभियांत्रिकी और व्यवसाय आदि क्षेत्रों में इन विद्यालयों से पढ़े हुए विद्यार्थियों का विशेष योगदान होगा।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन को अपने विद्यालयों के लिए आवश्यकतानुसार शिक्षकों को तैयार करने के लिए अपने स्तर पर शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान स्थापित करने होंगे जो अखिल भारतीय परीक्षा के आधार पर कक्षा 12वीं के पश्चात बीएड और अन्य शैक्षणिक पाठ्यक्रमों के लिए प्रशिक्षु शिक्षकों को चयनित कर प्रशिक्षित करेंगे। चूंकि, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षकों के सम्यक् प्रशिक्षण पर सर्वाधिक बल दिया है और यह भी कहा है कि देश में शिक्षकों के प्रशिक्षण की स्थिति बेहद खराब है। आधे-अधरे शिक्षित, अप्रशिक्षित, कुशिक्षित, अकुशल, दिशाहीन और अयोग्य शिक्षकों के भरोसे देश इस गुरुत्तर दायित्व का निर्वहन नहीं कर सकता। केन्द्रीय विद्यालयों को अपनी शैक्षणिक योजना में विस्तार करने की ज़रूरत है। संगीत, नृत्य, गायन, वादन, खेल, कला, पेंटिंग, गृहविज्ञान, सोशल मीडिया, मल्टीमीडिया, फ्रेशन डिजाइनिंग, कारपेंटरी, डेटा हैंडलिंग जैसे रोजगारोन्मुखी विषयों को भी अब अपने पाठ्यक्रम में शामिल करना अभीष्ट होगा।

हमारी शिक्षा पद्धति विद्यार्थियों में दक्षता को विकसित करने की प्रणाली पर केंद्रित है। बिना समझे रटने की पुरानी प्रवृत्ति का प्रतिस्थापन कौशल एवं दक्षता के विकास की पद्धति से होना आवश्यक है। केन्द्रीय विद्यालयों को अपनी ढाँचागत व्यवस्था में भी सुधार और विस्तार की ज़रूरत होगी। प्रयोगशालाएँ, खेल के मैदान, अत्याधुनिक वलासरूम, परम्परागत खाद्यान्नों की जानकारी की व्यवस्था, योग एवं ध्यान केंद्र आदि का उचित समावेशन ज़रूरी है। केन्द्रीय विद्यालय देश में सरकारी एवं गैर सरकारी सेवा हेतु भर्ती परीक्षा केंद्रों के रूप में स्वयं को विकसित करें, जिससे उनकी आर्थिक आमदनी तो बढ़ेगी ही अपितु देश के लिए लोकसेवकों के चयन हेतु एक उत्कृष्ट एवं पारदर्शी सेवा प्रदान करने का भी सुअवसर प्राप्त होगा। केन्द्रीय विद्यालय संगठन को अपनी प्रशासनिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से प्रत्येक संभाग के अर्थात् एक सौ केन्द्रीय विद्यालयों को रखने की प्रशासनिक व्यवस्था तैयार करनी होगी। इस प्रकार से एक सौ संभाग स्थापित किए जा सकते हैं।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन अपने मौजूदा ढाँचे में व्यापक परिवर्तन कर आने वाले वर्षों में राष्ट्र की अपेक्षाओं और महत्वकांक्षाओं को प्रभावी ढंग से पूर्ण कर सकता है। वस्तुतः संगठन का विस्तार शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के दृष्टिकोण, योजना एवं संकल्प पर निर्भर है।

सरदार सिंह चौहान

उपायुक्त

दिल्ली संभाग



Kovlam Beach, Ernakulam



A Glance at the Storied Journey of KV No. 1 Naval Base, Kochi

Kendriya Vidyalaya Sangathan had its beginnings in December 1963 with a view to having a uniform syllabus for the wards of transferable central government employees. In January 1964, when twenty regimental schools from all over India were adopted to form Central Schools, Naval Higher Secondary School, Kochi, was absorbed along with its entire staff strength to form the first ever 'Central School' of Kerala, which is now known as K.V.1, Naval Base, Kochi.

The school started with about 20 teachers and 200 students. Mr. M. R. Natarajan was at the helm as the first principal. The first student of K V 1 Kochi, admitted on June 24, 1964, was Shankar Subramanian, son of Krishnaswamy Subramanian, working for the Indian Navy. Initially, the school was under the ICSE scheme, but very soon, even as the academic session 1964–65 started, it fell under the CBSE. The school continued to function inside the Naval Base initially. There was a rush from the illuminati of Kochi to join the new 'Hindi school'. Since many civilians were also admitted, for security reasons, it was felt that the new school building should be constructed in the 'magazine area', later named Katari Bagh.

The school had classes up to Grade XI, the first batch with eleven students. The very first year, Sreedhar S brought fame to the school by being the All India Topper for the Board exams 1964–65.

FEDO, a division of FACT, was given the responsibility of the construction of the new school building. Mr. N. Shanmugham, the principal, laid the foundation stone in 1967. The first wing of the school, with four classrooms—office, staffroom, and lab—started functioning on the new premises in the later part of 1968. The 'C'-shaped main building was later added, enclosing a quadrangle that was the assembly ground and a meeting area for students.

The quarters for the staff and the principal, eight plus one, were constructed and occupied in 1970. The 'E'-shaped primary building was added later. The marshy area of KV1 Kochi, located on the man-made Wellington Island, was reclaimed, lifted, and filled with sediments and debris dredged out during the construction of the Cochin Shipyard in the late 1970s. Shade-giving coral wood trees [manjaadi] and rain trees were planted on either side of the path leading from the school gate to the main building. Children picking the red seeds of the coral wood tree are a common sight even today.

Sports Day was held in the Command Stadium and Annual Day at the Sagarika Theatre until the early 2000s. The NCC, Scout and Guide Unit, and Red Cross Society were formed in the school. The Photography Club started functioning under the able guidance of the famous muralist, Shri K. K. Warriar, Art Master of K V 1 Kochi. The class photos were taken, developed, and multiple copies printed by the club members. Now only NCC and S&G activities remain.

When INS Vikrant [R11] first visited Kochi, along with Mr. S. Krishnakumar, IAS, District Collector, Ernakulam, the K V No. 1 Kochi team was selected to welcome the British-made Indian aircraft carrier. An active Old Student Association organized a youth festival where teams from state schools participated as well. The grand closing ceremony was held in the TDM Hall, Ernakulam, with a very young playback singer, Sujatha, as the chief guest. The visit of Kamala Das, the famous English poet, was a memorable event in the history of KV No. 1 Kochi.

A set of five classrooms was added during the academic year 1993–94. The school further expanded with the Phase 1 building, inaugurated by the then KVS Commissioner, Mr. Rang Lal Jamuda, in 2009, housing ten classrooms, an airy, spacious library, a computer lab, and a conference room. The Phase 2 building that houses the primary classrooms was occupied in 2018.

Santhosh Kumar N
Deputy Commissioner
KVS Ernakulam Region



Cyber City, Gurugram



ज्ञान और सेवा के सफल 60 साल

लम्बे समय तक सैन्य शैक्षिक संस्थान में शैक्षिक कार्य करने उपरांत सन् 2009 में केन्द्रीय विद्यालय संगठन में प्राचार्य के पद पर कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। सैन्य विभाग में कार्य करते-करते परिवार से प्राप्त अनुशासन की प्रवृत्ति अधिक गहरी हो चुकी थी। केन्द्रीय विद्यालय संगठन में प्राचार्य का पदभार ग्रहण करने से पहले अनेक किन्तु परन्तुओं की लहरें मन में उठ रही थी, जैसे क्या मैं इस विशाल संगठन में समायोजित हो पाऊंगा ... क्या वैसा अनुशासित जीवन यहाँ मिलेगा जिसका मैं बचपन से आदी रहा हूँ?... क्या मुझे यहां वह संसाधन मिल पाएंगे जो एक आधुनिक शिक्षण संस्था में उपलब्ध होने चाहिए? संगठन में आने के पश्चात न केवल यह सब शंकाएं निर्मूल साबित हुईं, बल्कि एक झील से निकलकर महासागर में मिल जाने का एहसास हुआ। प्राचार्य के रूप में पहले अनुभव में ही दो पाली में चलने वाले केन्द्रीय विद्यालय का नेतृत्व करना चुनौती पूर्ण था लेकिन प्रतिदिन लम्बे समय तक कार्य करने की पूर्ण आवश्यकता स्वरूप पड़ी हुई आदत और उच्च अधिकारियों के मार्ग दर्शन ने इसे और भी आसान बना दिया।

सन् 2011 मैसूर में आयोजित अभिविन्यास कार्यक्रम, शिक्षक से प्राचार्य के रूपांतरण की एक महत्वपूर्ण कड़ी सिद्ध हुई। इस दौरान अनेक वरिष्ठ अधिकारियों एवं साथी प्राचार्यगण के शैक्षिक एवं प्रशासनिक अनुभव का लाभ उठाने का मौका मिला। इसका मेरे व्यक्तित्व एवं प्रशासनिक कार्य कौशल में कितना प्रभाव पड़ा यह इस बात से इंगित होता है कि इसके कुछ दिनों बाद ही एक शिक्षक ने हंसते हुए टिपण्णी की कि “महोदय कुछ बदले-बदले नजर आ रहे हैं” इस दौरान मैंने यह सीखा कि अनुशासन सुनिश्चित करने के लिए किसी प्रकार की प्रशासनिक कार्रवाई की आवश्यकता बहुत कम होती है। अनुशासन के लिए सबका सम्मान, सबको साथ लेकर चलने की प्रवृत्ति एवं किसी भी प्रकार की गुठबाजी को प्रोत्साहित करना सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन की एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि यह अपने मेहनती, ईमानदार एवं कर्तव्यनिष्ठ शिक्षकों, कर्मचारियों एवं अधिकारियों को व्यवसायिक उत्थान के अनेक अवसर प्रदान करता है। मैं संगठन का आजीवन ऋणी हूँ कि शिक्षक से प्राचार्य, प्राचार्य से सहायक आयुक्त एवं सहायक आयुक्त से के उपायुक्त पद पर उन्नत कर मेरा उत्साह बढ़ाये रखा है। केन्द्रीय विद्यालय संगठन में मेरी यात्रा के दौरान देश के विभिन्न भागों, विशेषकर पूर्वोत्तर के समाज एवं संस्कृति को नजदीक से देखने एवं इन भू-भागों में भ्रमण करने का सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ व अपने बड़े अधिकारियों, सहकर्मियों एवं यहां तक अपने अधीनस्थ शिक्षकों एवं कर्मचारियों से भी बहुत कुछ सीखने का मौका इसके लिए मैं संगठन का आभारी हूँ।

मैंने अनुभव किया है कि शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे नित नवीन अनुसंधानों को धरातल पर उतारने का अनूठा कार्य जिस मनोयोग से केन्द्रीय विद्यालय संगठन में होता है, उसकी मिसाल अन्यत्र ढूंढना अत्यंत कठिन है। नित नई चुनौतियों को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करते हुए उनका हल खोजना यहीं संभव है। हमारे अनेक विद्यालयों ने सीमित संसाधनों के उपरांत भी गुणवत्ता के ऐसे मापदंड स्थापित किए हैं जहां निजी शैक्षणिक संस्थान उनका अनुसरण करते हैं। अंतिम समय में मिले कार्य को भी शानदार एवं सफलतापूर्वक करने की हमारे शिक्षकों एवं कर्मचारियों की कला अन्यत्र उपलब्ध

मैं स्वयं को अत्यंत सौभाग्यशाली समझता हूँ कि मैं इस महान संस्थान की स्वर्ण जयंती एवं हीरक जयंती दोनों का साक्षी रहा हूँ। स्लेट से टैबलेट तक का सफर संगठन ने जिस सुगमता एवं सफलता के साथ तय किया है उस गौरवशाली परंपरा की कहानी मैं आज स्वयं कह रहा हूँ। हमारे महान देश की शानदार सांस्कृतिक विरासत इसकी विविधता एवं ज्ञान का अनूठा संगम देखना हो तो केन्द्रीय विद्यालय से उतम कोई दूसरी जगह शायद ही कहीं मिलेगी। बहुभाषिकता, सामाजिक-समरसता, धार्मिक सौहार्द, एक भारत श्रेष्ठ भारत का सजीव उदाहरण... कारगिल से लेकर पोर्ट ब्लेयर तक, त्वांग से लेकर जूनागढ़ तक, मॉस्को, काठमांडू और तेहरान तक जिसका छोटा लेकिन वैभवशाली इतिहास है, वह यही संगठन है।

खरगोश की आंखों जैसे उगते सूर्य की लालिमा, केसर से धुले आसमान जैसे नजारे और पक्षियों के कलख जैसे मधुर संगीत का एहसास करना हो तो प्रातः काल किसी भी केन्द्रीय विद्यालय की प्रार्थना सभा में चले जाइए, सब आपको वहाँ दिखाई दे जाएगा।

मैं हीरक जयंती के इस शुभ अवसर पर संगठन परिवार से जुड़े प्रत्येक सदस्य को हृदय की अतल गहराइयों से शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ और ईश्वर के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ कि मैं भी इस परिवार का सदस्य बना।

वरुण मित्र
उपायुक्त
गुरुग्राम संभाग



Kaziranga National Park, Assam



KVS Journey of Nation-Building through education

Education is a key catalyst in promoting national unity, as it can help citizens of the nation appreciate the diversity and uniqueness of their country and participate in its democratic and developmental processes. Since inception, Kendriya Vidyalayas have played a pivotal role in shaping the future of the nation by providing a structured environment that fosters academic, social, emotional, physical, and career development. And preparing the next generation of leaders, innovators, and thinkers.

Progressing with its four-fold mission and taking the holy shloka (chant) of Ishavasyopanishad "Tatvam Pooshan Apaavrunu" (तत्त्वं पूषण अपावृणु) as motto today, it has grown to a massive organization and became the largest chain of schools.

All KVs are equipped with the latest physical & digital infrastructure, delivering a burden-free, inclusive, child-centric, and enjoyable education for the all-round development of students. Rather than promoting rote learning, KVS is recognised as a pioneer for its innovation and experimentation, thinking & implementing ideas out of the box to adapt to crucial situations. During the period of COVID-19, it has also shown extraordinary performance to proceed differently with the implementation of digital education for academic progress and to maintain the sound physical & mental health of the students & teachers.

KVS is the pioneer in offering ample opportunities in co-curricular activities from school to national level in innumerable fields, including games & sports, art & culture, science & technology, scouts & guides, NCC, life skills, and many more.

With students of different languages, castes, creeds, communities, cultures, and traditions, KVS is well-known as mini-India and thus unceasingly contributing to nation-building and generating citizens with a great sense of Indianness, inculcating the sagacity and quality of rich Indian heritage & culture, and is ready to play a prominent role in fulfilling the most ambitious mission of Viksit Bharat-2047.

C S Azad
Deputy Commissioner
KVS Guwahati Region





Golconda Fort, Hyderabad



केन्द्रीय विद्यालय की स्वर्णिम यात्रा

सन् 1963 में भारत ने अंतरिक्ष में अपना पहला सॉकेट प्रक्षेपित कर पूरी दुनिया को अपनी प्रतिभा से अवगत कराया वहीं दूसरी तरफ 15 दिसंबर 1963 को भारतीय शिक्षा के क्षितिज पर केन्द्रीय विद्यालय संगठन रूपी धूमकेतु का उदय हुआ, जिसने भारतीय स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया। 20 रेजिमेंटल स्कूलों के साथ शुरू हुआ यह सफर अब आजादी के अमृत काल को पार कर अपनी स्थापना के 61 गौरवशाली स्वर्णिम वर्षों का साक्षी बनने जा रहा है। आज 1255 स्कूलों एवं 14 लाख से अधिक छात्रों के साथ केन्द्रीय विद्यालय संगठन विश्व के उत्कृष्ट एवं मार्गदर्शक शैक्षिक संस्थान के रूप में जाना जाता है।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन वास्तव में भारत की राष्ट्रीयता, विविधता एवं समावेशी शिक्षा की वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत करता है क्योंकि केन्द्रीय विद्यालय में भारत के हर तबके के विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते हैं। केन्द्रीय विद्यालय संगठन के द्वारा अपने विद्यार्थियों के बहुमुखी एवं सर्वांगीण विकास के लिए किए जा रहे अनवरत प्रयास अविस्मरणीय हैं। समाजिक उद्देश्यों से संबंधित पहल करने में केन्द्रीय विद्यालय संगठन हमेशा अग्रणी रहा है चाहे यह पर्यावरण सुरक्षा की पहल हो या एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम के द्वारा छात्रों में राष्ट्रीय एकता एवं जागरूकता विकसित करना हो, सभी कार्यों में केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने उत्कृष्ट भूमिका निभाई है। केन्द्रीय विद्यालय संगठन नई शिक्षा नीति के अनुरूप भविष्य की पीढ़ियों को अच्छे और जागरूक नागरिकों के रूप में तैयार करने के लिए दृढ़ संकल्पित है।

आज केन्द्रीय विद्यालय संगठन अपने विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए खेल और शारीरिक गतिविधियों पर उल्लेखनीय कार्य कर रहा है और इसी प्रकार अटल टिंकरिंग लैब, जिज्ञासा, राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस जैसे अन्य कार्यक्रमों के द्वारा छात्रों में वैज्ञानिक सोच एवं दृष्टिकोण को विकसित करने का सार्थक एवं गंभीर प्रयास किया जा रहा है।

आने वाले समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति में निहित 21वीं सदी के लिए निर्धारित कौशल जैसे विश्लेषणात्मक सोच एवं समस्या समाधान, डिजिटल साक्षरता कौशल, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी)साक्षरता, कैरियर और जीवन कौशल, पहल और आत्म-निर्देशन, सामाजिक एवं अंतर सांस्कृतिक अवधारणाओं के लिए आवश्यक राष्ट्रीय, शैक्षिक और वैज्ञानिक सोच के साथ केन्द्रीय विद्यालय संगठन राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सफल कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन करेगा। सेवा और समर्पण का यह सफर अनवरत नए कीर्तिमान स्थापित करेगा।

नवनिर्माण की अमृत शाला
आजादी के बाद रखी थी
नींव देश की शिक्षा की।
के वी एस ने थाम लिया था
ध्वज संस्कृति की रक्षा की॥

रचना धर्मिता के संग-संग
नव निर्माण का दूत बढ़ा।
सर्वांगीण विकास लक्ष्य था
युवा राष्ट्र को खूब बढ़ा॥

नवाचार को सूत्र बनाकर
नित नूतन संधान किए।
चंदामामा को छू लेने को
अनुसंधान छात्र दिए॥

नई शिक्षा नीति यह पर
शिक्षा का है शीर्ष बना।
नवनिर्माण -संकल्प लिए
हटा रहा नित कोहरा घना॥

भविष्य की मशाल थामकर
वर्तमान की सांस बटोर।
विविधताओं के पुष्पगुच्छ ले
कदम बढ़ाता नव निर्माण की ओर॥

डॉ. डी मंजुनाथ
उपायुक्त
हैदराबाद संभाग



Nidan falls, Jabalpur



KVS: 30 Years of Trailblazing Progress in Education and Administration

In the last 30 years, I have been a witness to the rapid rides that KVS has made. It is a matter of immense personal satisfaction to have witnessed the phenomenal growth KVS has gone through. I have served in different capacities in different parts of India.

In this long journey, KVS has always shown its readiness for the changing demands of the school education system. Introduction of future skill-based subjects, changes in pedagogy as required by education policies, embracing pilot projects for many new interventions in education, inclusion in all respects, well-equipped labs, development of sports infrastructure, conducting a variety of activities for the overall development of students, and in-service training of teachers and staff are notable fields where KVS is always pioneering. The e-portals (for pension, construction works, staff sanction, grievance redressal, salary disbursing, admission, accounting, budgeting, transfer of staff, and recruitment) brought greater transparency in office procedures, ensured timely completion of work, and enabled real-time monitoring by authorities at various levels.

School processes, viz., admission, fee collection, transfer and posting of staff, and selection and appointment of staff, have systematically improved from manual mode to technology mode with minimum manual intervention, resulting in increased efficiency, probity, equity, quality, and transparency. The claim is vindicated by ever-increasing pressure for admission in a Kendriya Vidyalaya.

Somit Shrivastav
Deputy Commissioner
KVS Jabalpur Region





Hawa Mahal, Jaipur



KVS: Shaping the Nation's Future Through Education and Innovation

Kendriya Vidyalaya Sangathan acronymed as KVS established on 15th December 1963 and started its journey with 20 regimental schools of the Indian Army under the name 'Central schools'. Undoubtedly, it can be pointed out that Kendriya Vidyalayas also known as centers of Excellence are considered earmarked institutions on the horizon of school education. Amidst the challenges and threats in the field of education, these institutions are continuously making remarkable records by encouraging innovation, experimentation, hands-on learning, experiential learning, and inclusive education through the transformation of educational administration and management as well. As it is rightly said, collective efforts always result in accomplishments. The newspapers' clippings also highlight its name and fame from time to time. Recently, Mr. Meet Bharat Kumar, who completed his schooling from Kendriya Vidyalaya Charoda, aided in ISRO's project Chandrayaan-3. Two teachers of Kendriya Vidyalayas have been selected for the National Awards to Teachers 2023. Of late, a KV alumna has joined hands to transform scrap into a mural. So, keeping in view the perpetual progress and untiring efforts of KVS, I firmly believe that KVS has been contributing to shaping the Nation's future since its inception.

The NEP-2020 has opened up a wider scope of pedagogical methodologies and technological integration in the teaching and learning process. The policy has paved the path for the all-round development of the learner, especially the FLN, with the focus on making the young mind fundamentally stronger in their initial stage of life. To a large extent, Kendriya Vidyalaya Sangathan is leaving no stone unturned in implementing all the prescribed provisions to ensure the 360-degree holistic development of the learner. Moreover, KVS is sincerely intended to carry out the concept of PM SHRI schools, where a wide range of learning experiences are offered and good physical infrastructure and appropriate resources conducive to learning are available for all the students.

Finally, it can be summed up that KVS has been successful in achieving several milestones during its journey in the scholastic and co-scholastic areas and constantly moving ahead with its dynamic coordination and skillful administration.

I congratulate and convey my best wishes to all KVains for the KVS Diamond Jubilee Celebration.

B.L. Morodia
Deputy Commissioner
KVS Jaipur Region





Amar Mahal Palace, Jammu



केन्द्रीय विद्यालय और मैं

बचपन की छवि

के.वि. में शिक्षा न लेने के बावजूद मेरा के.वि. के साथ एक नाता बचपन से ही रहा है। मेरी बुआ के बच्चे के.वि. में पढ़ते थे, एवं गर्मी की छुट्टियों में जब वो अपने ननिहाल 'थानि' हमारे गाँव आते थे तो के.वि. की कहानियाँ उसकी शिक्षा का स्तर एवं खास कर उनके खेलकूद के मैदान मुझे बहुत प्रभावित करते थे। हमारे क्षेत्र में जहाँ कबड्डी, कुश्ती इत्यादि प्रचलित तो थी परन्तु हमारे पसंदीदा क्रिकेट एवं फुटबॉल के मैदान उपलब्ध नहीं थे। दरअसल के.वि. में पढ़ना मेरे लिए किसी सपने की तरह था।

के.वि. एवं मेरा सफ़र

के.वि. में एक पीजीटी (Physics) की तरह जब मैंने अपना करियर नार्थ ईस्ट (North East), से शुरू किया तो मेरी एक कॉलेज प्रोफेसर का फोन आया कि तुम्हारा इतना अच्छा अकादमिक करियर है कि तुम्हें कॉलेज लैक्चरर में प्रयास करना चाहिए, परन्तु केन्द्रीय विद्यालय के प्रति मेरी निष्ठा की भावना ने मुझे इस संस्थान से जोड़े रखा और मेरे सपने को पूरा करने में मेरी पूरी सहायता की।

भौतिक विज्ञान के अध्यापक के रूप में मेरा कार्यकाल उदयपुर राजस्थान में अत्यधिक सफल रहा। के.वि.सं. ने मुझे फिर मौका दिया एवं स्नातकोत्तर शिक्षक से सीधे ही शिक्षा अधिकारी (अभी का सहायक आयुक्त) के पद पर चयनित हो गया।

सहायक आयुक्त एवं उपायुक्त के रूप में मुझे के.वि.सं. (मु.) में कार्य करने का मौका मिला। जब के.वि.सं. आईसीटी कार्यालयन के आयाम को कंप्यूटरीकरण से आगे ले जाना चाहता था, तो के.वि.सं. के पहले 750 ई-विकास रूम को स्थापित करने से संबंधित प्रक्रिया में मैंने अपना पूर्ण योगदान दिया। आज आईसीटी कार्यालयन एवं रणनीतिक शिक्षण की बात होती है तो के.वि.सं. देश के अग्रणी संस्थानों में गिना जाता है। के.वि.सं. आपको नवाचार करने के लिए काफी स्वतंत्रता देता है। मैंने अपनी संची पद्धस्थापना के दौरान 2015 में दो के.वि. में रोबोटिक लैब डिजिटल प्रिंटर के साथ लगवाई (ATL से भी पहले) और दसवीं व बारहवीं के बच्चों के लिए प्रेस्क वार्ता करवाई गई जिसके परिणाम स्वरूप रांची संभाग का बारहवीं कक्षा का परिणाम चार साल में 10-11% बढ़ा (87.5 से approx. 98.7 तक बढ़ा)। जिसमें इस नवाचार का काफी योगदान रहा। मानव जीवन एक्सपोज़र, अनुभव और विकास के बारे में है और के.वि. आपको एक्सपोज़र देता है इससे अनुभव आता है एवं आपका सर्वांगीण विकास होता है। इसी को ध्यान में रखकर दिल्ली संभाग में देश की प्रथम VR (आभासी वास्तविकता) लैब एवं AI (कृत्रिम होशियारी) लैब लगवायी गयी है।

के.वि.सं. ने अपने विद्यार्थियों के रूप में एक बहुत बड़ी ताकत खड़ी की है हालांकि इस शक्ति का पूर्ण सदुपयोग के.वि.सं. द्वारा करना अभी बाकी ही है। के.वि.सं. ने 60 वर्ष पूरे कर लिए हैं किसी भी व्यक्ति के हिसाब से ये काफी लम्बा समय होता है पर संस्थान के हिसाब से ये अभी उसकी किशोरावस्था ही है।

हमारा केन्द्रीय विद्यालय संस्थान प्रधानमंत्री के विकसित भारत के 2047 की दृष्टि से मिलान कर सके उसके लिए अभी से एक रूपरेखा एवं योजना की आवश्यकता है। शिक्षा में बदलाव तकनीकी विज्ञान की तरह तेजी से तो नहीं होते, पर मैं आशान्वित हूँ कि आने वाले वर्ष 2047 में जब हमारे देश की शिक्षा के क्षेत्र में हुई उपलब्धियों को गिना जाएगा तो निश्चित ही हमारा केन्द्रीय विद्यालय संगठन भी उस उपलब्धि का एक अहम हिस्सा होगा।

नागेन्द्र गोयल
उपायुक्त
जम्मू संभाग





Belur Mutt, Kolkata



के.वि.सं. में वार्षिक शैक्षिक निरीक्षण का महत्व

केन्द्रीय विद्यालय संगठन (KVS) एक महत्वपूर्ण शिक्षा संगठन है जो भारतीय शिक्षा क्षेत्र में अपने उद्दीपन के लिए प्रसिद्ध है। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को उनके पूरे समर्पण और उन्नति के साथ शिक्षा प्रदान करना है। इसके विद्यालयों के निरीक्षण का महत्वपूर्ण हिस्सा है जो विद्यार्थियों की शिक्षा और संप्रेषण में सुनिश्चितता और गुणवत्ता को सुनिश्चित करने में मदद करता है।

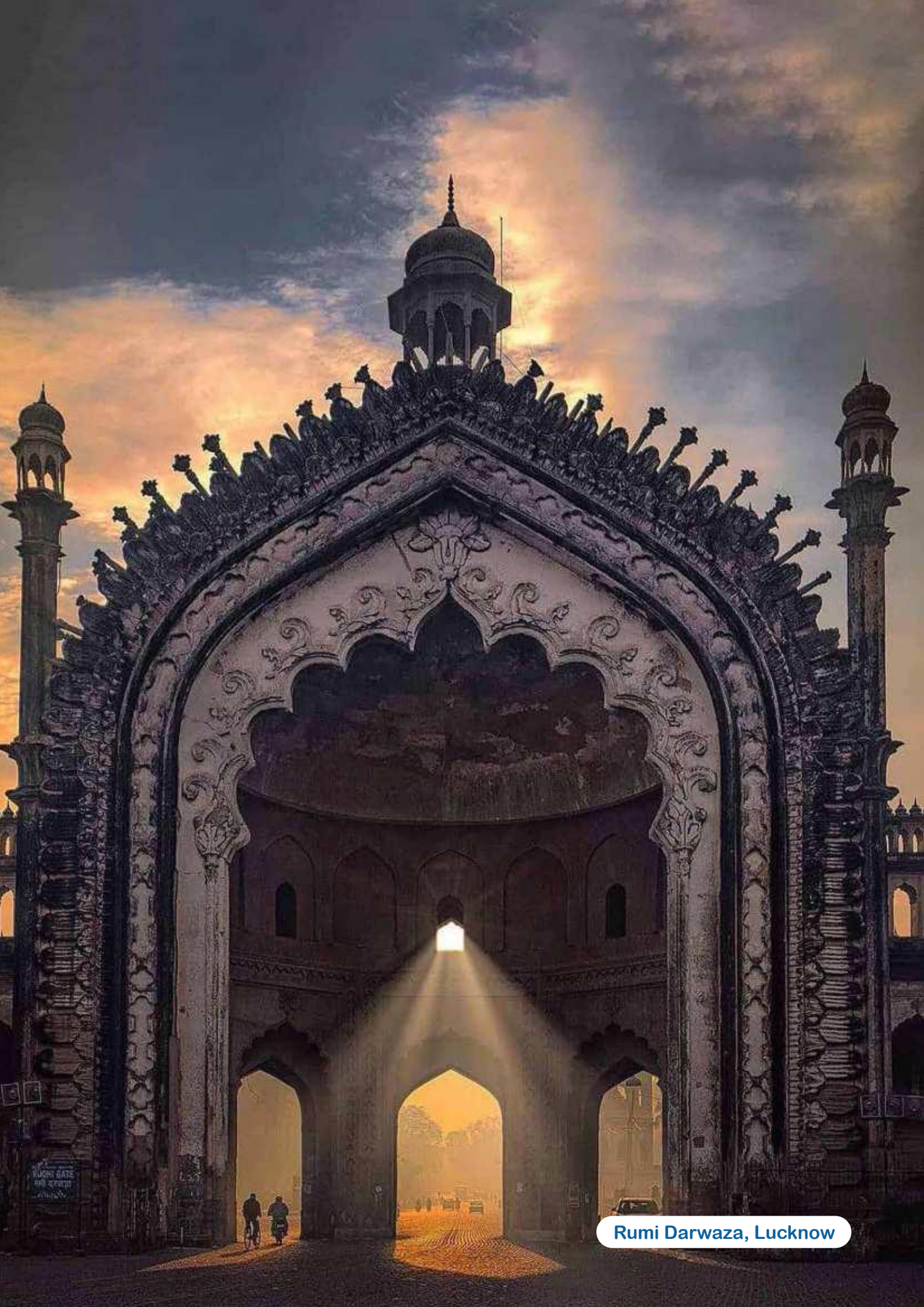
वार्षिक शैक्षिक निरीक्षण का अभिन्न आयोजन होता है जो संगठन के नेतृत्व द्वारा किया जाता है। यह निरीक्षण दल में उच्च स्तर के शिक्षा अधिकारियों को शामिल करता है, जो शिक्षा के क्षेत्र में अच्छे अनुभव और ज्ञान के साथ समर्थ होते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यालयों की कार्यप्रणाली, शिक्षण पद्धति, और छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन करना है। इसके लिए विद्यालयों में शिक्षा के सभी पहलुओं को बारीकी से जाँचा जाता है।

निरीक्षण के दौरान, निरीक्षक विद्यालय के सभी क्षेत्रों की जाँच करते हैं, जैसे कि शिक्षण प्रक्रिया, पाठ्यक्रम, पुस्तकालय, सामग्री, और शिक्षा सहायक सुविधाएँ। इसके अलावा, विद्यालयों की अनुसंधान योजनाएँ, कौशल विकास कार्यक्रम का भी मूल्यांकन किया जाता है। निरीक्षक छात्रों की प्रगति, उनके अकादमिक और व्यक्तिगत विकास में जुटे होते हैं और इसे सुनिश्चित करने के लिए सुझाव देते हैं।

विद्यालय की शिक्षा से जुड़े हर पहलुओं को बारीकी से मूल्यांकित करने के लिए वार्षिक शैक्षिक निरीक्षण एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। निरीक्षण के दौरान निरीक्षक विद्यालय के स्वरूप, उद्देश्य, और उसकी सांस्कृतिक पहचान को भी महसूस करते हैं। निरीक्षक निरीक्षण के दौरान केवल गलतियाँ निकालने के बजाय प्रेरणा, स्व-प्रदर्शन, अनुभूति आदि के माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया को गतिशील बनाते हैं। अतः निरीक्षण एक सामूहिक प्रक्रिया है जिसमें सब की सकारात्मक भागीदारी रहती है।

वाई अरुण कुमार
उपायुक्त
कोलकाता संभाग





Rumi Darwaza, Lucknow



बदलते भारत का प्रतीक – के.वि.सं.

केन्द्रीय विद्यालय संगठन की ये 60 वर्षीय यात्रा बदलते भारत का प्रतीक है और 1963 की एक विनम्र शुरुआत आज एक विराट स्वरूप लेकर, भारतीय स्कूली शिक्षा के प्रतिनिधि और प्रतीक के रूप में स्थापित हो चुकी है। अपनी इस यात्रा में केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने अनेक उतार चढ़ाव, बदलाव और चुनौतियों से साक्षात्कार किया है और एक जीवंत इकाई के रूप सदैव अपने आप को साबित किया है तथा सतत रूप से प्रत्येक स्थिति में अपने आपको अनुकूल बनाते हुए न सिर्फ शैक्षिक उत्कृष्टता कायम रखी अपितु उच्च मानवीय मूल्यों को प्रतिस्थापित, पोषित और संचारित किया है।

बदलते वैश्विक परिदृश्य में और वैश्विक शिक्षा लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु, भारत की स्कूली शिक्षा व्यवस्था को विश्वस्तरीय मानदंडों के अनुरूप व्यवस्थित एवं स्थापित करने के राष्ट्रीय दायित्व में भारत सरकार की स्कूली शिक्षा की दशा और दिशा दोनों को तय करने के सामर्थ्य के साथ कार्यरत यह संगठन भारत के नव निर्माण में गुणात्मक भूमिका निभा रहा है।

नालंदा एवं तक्षशिला के शैक्षिक वातावरण की प्रतिकृति के पुनर्स्थापन के ध्येय के साथ अपने कार्यों में भारतीय ज्ञान परम्परा, संपन्न संस्कृति एवं इसमें अंतर्निहित सार्वत्रिक भाव के प्रति आस्था एवं विश्वास जागृत करने की स्वस्थ परंपरा के फलस्वरूप राष्ट्रीय एकता और एक भारत श्रेष्ठ भारत के निर्माण में अग्रणी भूमिका का निर्वहन करते हुए संगठन ने अपने शिक्षकों के समर्पण एवं प्रशासकों के कुशल मार्गदर्शन में देश के कोने-कोने में स्थित विद्यालयों से होनहार छात्रों को गुणी, राष्ट्र प्रेमी एवं गौरवशाली भारतीय संस्कृति के साथ ही एक श्रेष्ठ वैश्विक नागरिक के रूप में विकसित किया है। 1255 से अधिक केन्द्रीय विद्यालय, भारतीय विविधता में एकता एवं वसुधैव कुटुम्बकम् के अप्रतिम प्रतीक हैं।

आजादी के इस अमृतकाल में 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के राष्ट्रीय संकल्प में केन्द्रीय विद्यालय संगठन अपनी भूमिका के प्रति न सिर्फ जागरूक है अपितु अहर्निश कार्यरत है।

अनूप अवस्थी
प्रभासी उपायुक्त
लखनऊ संभाग





Ajanta Caves, Mumbai



KVS: Pioneering Education, Nurturing Excellence

Kendriya Vidyalaya Sangathan has come a long way in its 60 year journey in education from its inception with 20 Central schools in 1963 to 1255 Kendriya Vidyalayas in 2023, and more in the offing. As one of the world's largest government-funded schooling systems, we proudly serve the developmental needs of over 14 lakh students

Although Kendriya Vidyalayas always prioritize students whose parents face frequent transfers due to government employment, they remain open to all, ensuring equity, access, and quality education. The staggering demand for admissions to KVs attests to the excellence of our educational offerings. In a country as vast and diverse as Bharat, providing a single system of education to students from different linguistic backgrounds, following a variety of religions, faiths and cultures, living across various geographical terrains, is no doubt a daunting task. Nevertheless, Kendriya Vidyalaya Sangathan not only embraces this challenge, it excels in fostering inclusive education, non-discriminatory practices, learning in the mother tongue, leveraging technology, and placing the learner at the core of all educational efforts. Long before these concepts had become educational norms, KVs were pioneers in incorporating inclusive practices, emphasizing sports and instilling life skills.

The National Education Policy 2020 underscores community engagement and collaboration with neighbouring school systems. Kendriya Vidyalayas actively participate in community practices, sharing their resources and expertise with neighbouring schools as a part of their daily activities for many years now. SEWA, or social engagement and assistance, is integral to the academic life of Kendriya Vidyalaya learners, evident in initiatives like Pustakophar or support for differently-abled individuals.

Even when the world was only concerned about examinations and marks, KVS recognized the significance of physical health and wellness and nurtured holistic development through yoga and sports. With ample opportunities to indulge in sports of their choice and at their own pace, our students have consistently excelled at national and international events, a testament to how the emphasis on sports is shaping their personalities.

Anticipating the future needs of learners, Kendriya Vidyalayas have embraced skill education as a mainstream subject, allowing students to explore a range of skills like pottery, painting, sculpting, carpentry, electrical equipment, embroidery, knitting, and even cooking, as well as AI, coding, etc., as a part of the curriculum. This approach has resulted in many learners finding success in diverse fields such as performing arts, painting, and business.

Aligned with the spirit of NEP 2020, Kendriya Vidyalayas have implemented a paradigm shift from rote learning to competency-based education and experiential learning, providing learners with a more personalized and flexible learning experience. The pedagogical shifts have led to enhanced student engagement, fostering creative and critical thinking, and preparing them for real-world challenges.

Teachers in KVS are recruited through a rigorous selection process to ensure that they have the requisite competence and skills. Continuous guidance & support through well-designed capacity-building programs further equip them to stay updated with evolving educational trends.

Kendriya Vidyalaya Sangathan stands at the forefront of educational innovations, nurturing students who embody Bharat's ethos while emerging as global citizens capable of innovation and creativity. Our commitment to excellence echoes in every Kendriya Vidyalaya, transforming education into an empowering experience. Steadfastly advancing on a journey of continuous improvement, each progressive initiative by KVS is a commitment aimed at cultivating responsible and responsive future citizens not only equipped with all essential skills suited to the 21st century but also deeply rooted in the Indian culture and value system.

Aligned with the spirit of NEP 2020, Kendriya Vidyalayas have implemented a paradigm shift from rote learning to competency-based education and experiential learning, providing learners with a more personalized and flexible learning experience. The pedagogical shifts have led to enhanced student engagement, fostering creative and critical thinking, and preparing them for real-world challenges.



Teachers in KVS are recruited through a rigorous selection process to ensure that they have the requisite competence and skills. Continuous guidance & support through well-designed capacity-building programs further equip them to stay updated with evolving educational trends.

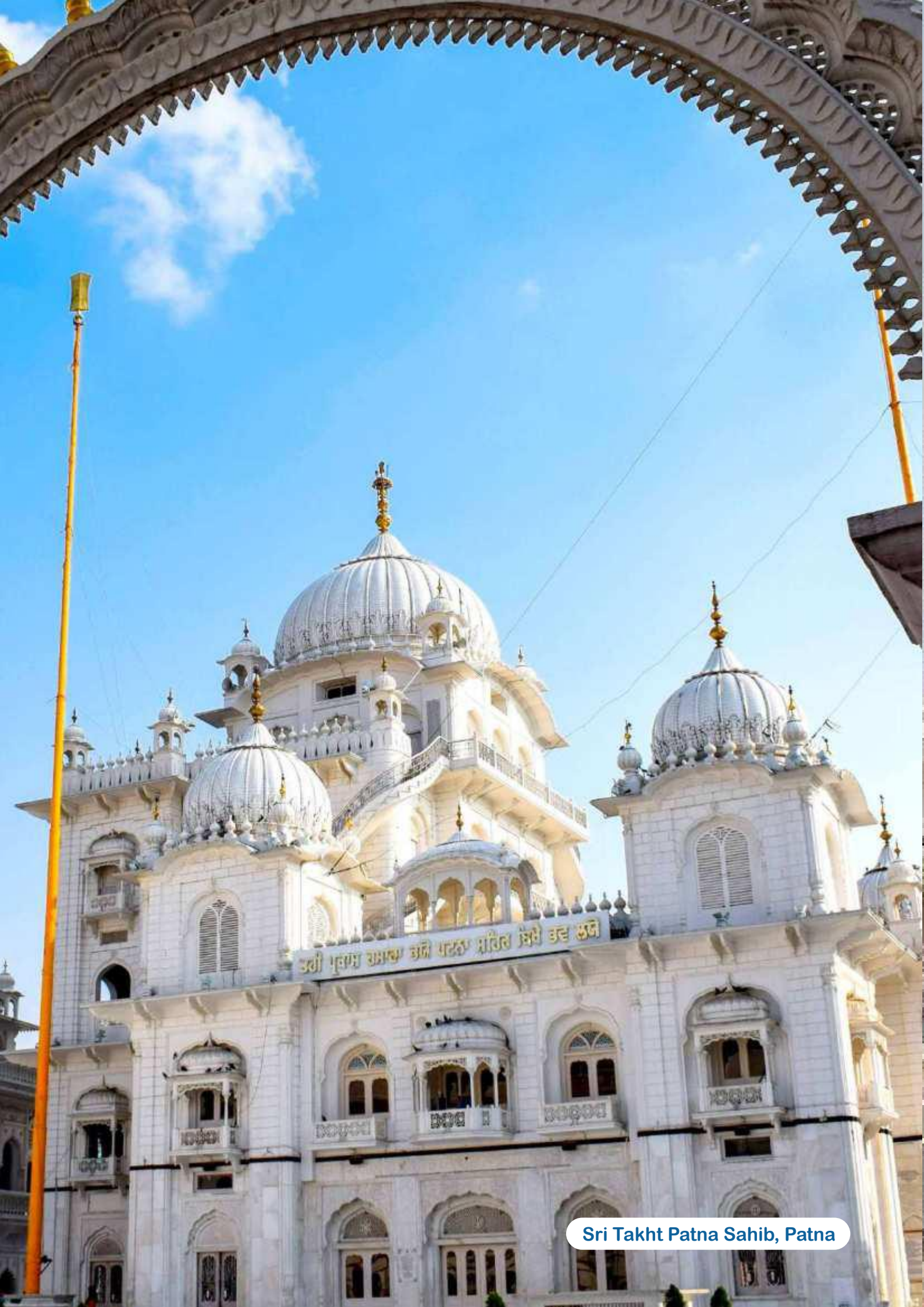
Kendriya Vidyalaya Sangathan stands at the forefront of educational innovations, nurturing students who embody Bharat's ethos while emerging as global citizens capable of innovation and creativity. Our commitment to excellence echoes in every Kendriya Vidyalaya, transforming education into an empowering experience. Steadfastly advancing on a journey of continuous improvement, each progressive initiative by KVS is a commitment aimed at cultivating responsible and responsive future citizens not only equipped with all essential skills suited to the 21st century but also deeply rooted in the Indian culture and value system.

Sona Seth
Deputy Commissioner
KVS Mumbai Region





*Alongside books, let laughter flow,
With friends around, our spirits grow.*



ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਪਾਠਨਾ ਸ਼ਹਿਰ ਸਿੱਖੀ ਕੇ ਵੱਡੇ ਠੰਡੇ

Sri Takht Patna Sahib, Patna



Six Educational Decades

In a remarkable educational journey spanning six decades, Kendriya Vidyalaya Sangathan has stood as a symbol of excellence, nurturing young minds and promoting comprehensive development. Starting with a modest beginning of 20 regimental schools, it has grown to encompass over 1250 schools dedicated to serving the nation. These institutions were initially established to cater to the educational needs of transferable Central Government employees' children, ensuring uninterrupted schooling during the academic sessions.

From its humble origins to its current prominence, KVS has remained steadfast in its commitment to delivering high-quality education. The institution has not only imparted knowledge but has also instilled values, shaping a generation of responsible and skilled individuals.

Adapting to the evolving educational landscape, KVS has embraced technology and innovative teaching methodologies over the years. The success story owes much to the dedication of educators, the enthusiasm of students, and the support of parents. Kendriya Vidyalaya Sangathan has emerged as a trailblazer in implementing the National Education Policy 2020, introducing Bal Vatikas in Kendriya Vidyalayas alongside other significant initiatives.

As we commemorate 60 years of educational excellence, let us acknowledge the numerous achievements, the resilient spirit, and the lasting impact of Kendriya Vidyalaya Sangathan. This celebration is not just an occasion for nostalgic reflection but an opportunity to envision a more dynamic role for the future!

Anurag Bhatnagar
Deputy Commissioner
KVS Patna Region



Ujjayanta Palace, Tripura, Silchar





Journey of KVS in 60 Years

In nature, all birds tend to move to their nest when it rains but Eagle flies over the cloud to overcome rain. The Central School Organization was conceived in November 1962 to provide education to the children of Defense personnel who were subject to transfers. Initially, 20 regimental schools were taken over as Central Schools during the academic year 1963-64. Later, CSO was renamed as Kendriya Vidyalaya Sangathan and was registered as a society on 15th December 1965 which we celebrate as KVS Foundation Day and KVS was entrusted with role of strengthening the School education of Country. The six decade saw increment of 20 regimental schools into network of 1255 schools beholding vision of Quality education & National Integration. The expanse of KV connects the geographical coordinates many districts of country and serves with proud in Nepal, Iran and Russia.

As an organization, KVS harnesses the excellence of Human resource through rigour of training, use of technology and exposure to international trends in education. KVS operates through 25 regions and 5 ZIETS to promulgate the deep rooted cultural values and quality education.

The zenith of KVS has been through a process of continuous practice, assessment and embracing technology and methods to improve on all fronts. The world class infrastructure and processes can be inferred from excellent facilities for games and sports, ICT, Modernized scientific labs, Atal Tinkering Labs and many more. The selection of 735 KVS as PM SHRI Vidyalayas is evidence of the culture of excellence and national trust. KVS has always been forerunner in implementing innovation and policies as framed by Government from time to time.

The contribution of KVS in transforming human resource into global citizen is paramount and is done through execution of various programmes that are aligned with Nations expectation. Some notable area include Implementation of NEP, Swachatah Pakhwada, Fit India, Skill hub, PPC ,Youth parliament and many flagship programs on development of Scientific acumen, social cohesiveness, self-Reliance and entrepreneurial skills. The alumnus of KVS includes Leaders in Defence, Civil services, Politics, Sports, Medicine, Scientific Research, Aviation, Legal services and many other field.

Out of 60 years of KVS journey I travelled 22 years right from 2001 and witnessed paradigm shifts in pedagogy, use of technology, professional development opportunities, improvement in infrastructure e-governance and many others. The prosperity of Staff and all stakeholder lies in the center of all action of KVS.

This is evident from a happy and efficient team of over 41 K staff catering to over 14 lakhs students from all sections of society. The journey in last 6 decade has been from infancy to youth hood where vision is transformed into action, hopes are developed as professionals. I have lived the journey of independence to interdependence with the majestic organization in Kendriya Vidyalaya Sangathan.

P.I.T Raja
Deputy Commissioner
KVS Silchar Region





Patratu Valley, Ranchi



Remarkable 6 decades of an ever-growing organisation

Education is the chief defence of a nation. Prosperity of a Nation is measured by quality of citizen. The schools are catalytic in promoting scientific enquiry, instil patriotism and shape character to make society harmonious. Kendriya Vidyalaya Sangathan is an organisation that has strengthened the nations endeavours of producing quality citizen and is pioneer and pace setter in the field of school education since its establishment in 1964. With a strong commitment to providing quality education, the KVS has established a network of schools and across India which saw implementation of National education Policy 1968,1986 and torch bearer in showcasing tenets of the of NEP 2020. The early years marked rapid expansion of KVS from 20 Regimental Schools to leading network in school education. The second decade saw organisational expansion and diversified educational offering that added to the pace of National Progress.

The next two decades was marked with consolidation and innovation for KVS. The focus of organisation was on improving the quality of education through introduction of new teaching methods and technologies. It also established a number of research centres to promote educational research and innovation. The establishment of ZIET was pivotal in promoting research-based training to the teachers and was empowering.

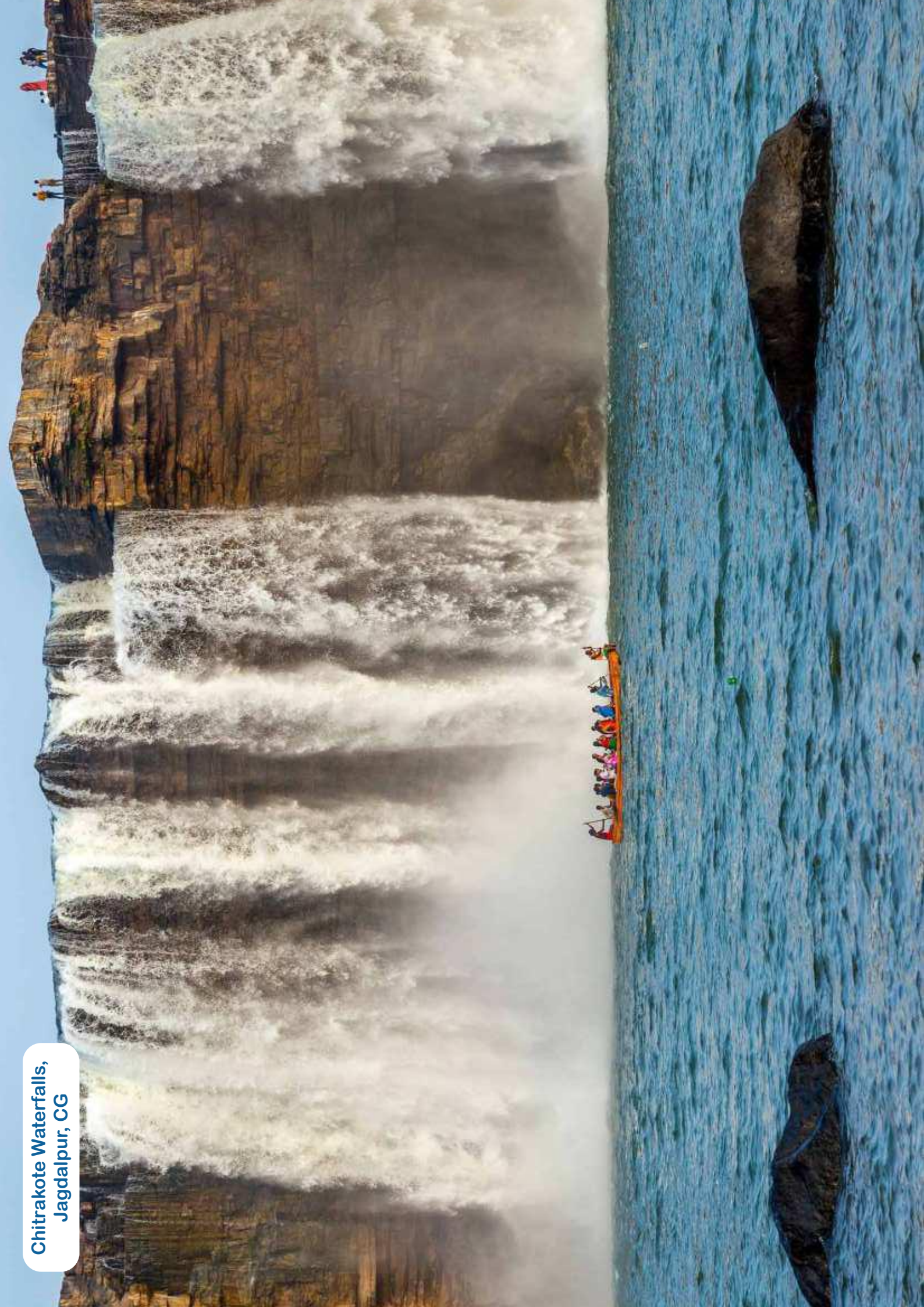
The Last two decades witnesses extensive growth, international presence and enhanced excellence in providing Quality education directed towards holistic development of Children. The laurels of alumni of KVS pervades the horizon of R & D, Space Technologies, Sports, Media and entertainment, Governance, administration, medicine and myriads of profession which adds to Nation's transformation.

Today, Kendriya Vidyalaya has network of 1255 Schools which operates through fleet of 41518 dedicated staff and caters to around 14 lakhs students. The KVS has privilege of being an educational state divided into 25 regions for educational purpose. I take this opportunity to congratulate all those who have contributed in promoting excellence in educational standards of this organisation during last six decades. The KVS has made significant contribution in enhancing the school education level of the people across the country. Proud to be a KVian....

D. P. Patel
Deputy Commissioner
KVS Ranchi Region



Chitrakote Waterfalls,
Jagdarpur, CG





Celebrating 60 Glorious Years of Kendriya Vidyalaya Sangathan

Kendriya Vidyalaya Sangathan, in its journey of education spanning six decades, has been a beacon of excellence, nurturing young minds and fostering holistic development. Established in 1963, KVS has grown into a network of over a thousand schools, shaping the educational landscape of our nation.

KVS Raipur region, since its inception in April 2012 has been steadfast in its commitment to providing quality education in the state of Chhattisgarh, the rice bowl of India. Presently, it is not only imparting knowledge but also instilling values in over 37000 students, creating a generation of responsible and skilled individuals.

Over the years, KVs under Raipur region have adapted to the evolving educational landscape, integrating technology and innovative teaching methodologies. The dedication of teachers, zeal and enthusiasm of students, and the support of parents have been instrumental in the success story of KVS.

Programmes like Rashtriya Ekta Parv, Meri Mati Mera Desh, Pustakopahaar, Seema Darshan, Fit India School Week, Swachchh Vidyalaya Abhiyan etc have been instrumental in developing a sense of Indianness among children and making them responsible citizens.

After my joining this Region in July 2021, my focal areas of development have been academics and its physical-psychological environment. Education being a leveller can bring a positive-constructive change, we have been trying to inculcate learning culture in the 37 KVs of the region with a strong team of over 1800 staff. My strong belief is that if we get success in developing 21st century skills in these children of tribal background, they will portray the picture of real futuristic-citizens of India.

Vinod Kumar
Deputy Commissioner
KVS Raipur Region





Ganga Aarti, Varanasi



के.वि.सं. भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का समावेश

सन् 1960 का दशक, 1963 में 20 रेजिमेंटल स्कूल के साथ केन्द्रीय विद्यालय संगठन का वट वृक्ष आगे बढ़ा, पल्लवन एवं पुष्पन हुआ, परिणामतः एक बृहद् वृक्ष अपनी सघन छाया में करोड़ों की ज्ञान पिपासा को तृप्त करता हुआ, अपने शीर्ष पड़ाव पर पहुंच चुका है। केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक सुधार के साथ-साथ तकनीकी आधारित शिक्षा, नई सुविधाओं एवं नई शिक्षण पद्धतियों के साथ-साथ नैतिक मूल्यों को भी अंगीकार करते हुए छात्र-छात्राओं में भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का समावेश किया है, और आज ऐसा लगता है कि जैसे केन्द्रीय विद्यालय संगठन स्वयं में भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को समेटे एक लघु भारत हो।

केन्द्रीय विद्यालय भारत के भाविक कर्णधारों में केवल पुस्तकीय ज्ञान को ही प्रदान नहीं करता बल्कि अपनी अनेक योजनाओं जैसे, एक भारत श्रेष्ठ भारत, भाषा संगम आदि के माध्यम से आपसी दूरियों को समेटे विविधता में एकता जैसी युक्ति को चरितार्थ करता है। जाति, धर्म, संप्रदाय, क्षेत्र एवं भाषा की विषमता को समाप्त कर सरसता, समरसता एवं सद्भाव की भावना का संवर्धन किया। राजभाषा हिंदी तथा भारत संघ की अन्य भाषाओं के निरंतर उत्थान हेतु केन्द्रीय विद्यालय द्वारा किये गये प्रयास हमें गौरव की अनुभूति कराते हैं। आज केन्द्रीय विद्यालय के नौनिहाल समूचे भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी अपनी विलक्षण प्रतिभा का अपूर्व परिचय दे रहे हैं। विदेशों में स्थापित केन्द्रीय विद्यालयों ने 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना को और दृढ़ किया है।

'फिट इंडिया' जैसी योजनाओं द्वारा बालकों को केवल खेलने के लिए ही प्रेरित नहीं किया गया, अपितु 'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है' की कहावत से अवगत कराया गया ताकि वे स्वस्थ रहने की होड़ में शामिल हो सकें। 'स्किल इंडिया' योजना रोजगारोन्मुख शिक्षा, जो आज रोजगार के क्षेत्र में एक कामयाबी का पायदान बन चुका है, लोगों द्वारा काफी प्रशंसनीय रहा है। पूरब से पश्चिम एवं उत्तर से दक्षिण को एक सूत्र में पिरोने का श्रेय यदि किसी को जाता है, तो वह केन्द्रीय विद्यालय संगठन ही है जिसकी आज अनुगूंज भारत के जन-जन में ध्वनित हो रही है।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि इस कार्य-योजना के साथ भारत कुछ ही दिनों में विकसित देशों की श्रृंखला में अग्रणी होगा और विकास के क्षेत्र में अकाश की बुलंदियों को छुएगा।

डॉ० अजय कुमार मिश्र
उपायुक्त
वाराणसी संभान





Shree Govindajee Temple, Manipur



KVS Transforming Education into Nations Development

An analytical study of the school education system and the changes that have taken place over the years in modern India would be incomplete without mentioning the contribution of the Kendriya Vidyalaya Sangathan (KVS) and the role this organization has played in the field of school education in the country. From its humble beginnings with 20 schools in 1963–64, it has evolved into one of the largest chains of schools in the country, boasting over 1250 schools. Today, proud KVians can be found all over the country and the world, performing their duties to society and embodying the ethos and culture instilled in them by the KV system. KVS has transformed education from traditional blackboard methods to interactive boards and from physical textbooks to e-books.

The KVS Tinsukia Region, with 42 functional KVs, is one of the youngest among the 25 regions of KVS. The KVs in the Tinsukia Region, spread across the states of Arunachal Pradesh, Assam, Nagaland, and Manipur, provide uninterrupted education to the children of Central Government employees posted in some of the farthest and remotest corners of our country. Additionally, they cater to the educational needs of the local populace, proudly fulfilling their mandated duties and contributing to national development and integration.

T. Brahmanandam
Deputy Commissioner
KVS Tinsukia Region





***KVians, with their little hands,
Nourish Earth, where life expands***





***The Memoirs of
KVS ZIET Officials***



Dhuli Giri Shanti Stupa, Bhubaneswar



KVS: Where Academics, Artistry, Yoga, & More Converge for Development

As the Kendriya Vidyalaya Sangathan commemorates its 60-year legacy on December 15, 2023, one cannot help but reflect with immense fondness and pride on its journey since its establishment with 60 regimental schools in 1963. The institution provides a distinctive educational experience, fostering the holistic development of learners by equally emphasizing intellectual, physical, emotional, and social growth. It molds students into confident, self-dependent individuals with well-rounded personalities.

The curriculum at Kendriya Vidyalaya Sangathan has always been comprehensive, including art, music, S.U.P.W (now Work Experience), Games & Sports, and Yoga, in addition to regular subjects. The institution places equal emphasis on academics, sports, games/Yoga, co-curricular activities, AE, VE, and life skills. While the United Nations declared June 21 as International Yoga Day in 2014, Yoga has long been an integral part of the daily routine for KV students.

In an era where there is an increased focus on vocational education, skill development, and life skills in contemporary India, KV students have been engaged in practical activities like making samosas, chats, embroidery, tailoring, tinkering with gadgets, setting up PA systems, and cultivating kitchen gardens during SUPW sessions.

Participating in inter-house sports, co-curricular activities, annual sports days, and competitions not only fosters healthy competition but also unlocks latent talents among students. National-level contests in sports, games, co-curricular activities, Olympiads, science exhibitions, and social science exhibitions provide limitless opportunities for students to explore their potential.

With students from different states and inclusive classrooms, each Kendriya Vidyalaya represents a microcosm of India, instilling a sense of unity among future citizens. The institution has played a significant role in nurturing especially-abled children, even before the enactment of the RPWD Act 2016, with meticulous codal provisions in place to safeguard the interests of students and teachers.

The illustrious alumni of Kendriya Vidyalaya Sangathan bear testimony to the institution's commitment to best practices in school education. Undoubtedly, KVS has been a pace-setting educational institution with excellence as its hallmark.

P. B. S. Usha
Director
ZIET Bhubaneswar



Rock Garden, Chandigarh



Celebrating Excellence: KVS A Beacon of Knowledge and Unity

In the grand tapestry of knowledge's domain,
Kendriya Vidyalaya Sangathan does reign,
A splendid jewel, sparkling with grace,
In education's realm, an esteemed place.

Kendriya Vidyalaya Sangathan stands as a shining beacon of educational excellence, a testament to the highest standards of learning and character-building. With an illustrious history and an unwavering dedication to the pursuit of learning, KVS is a lighthouse guiding students towards a brighter, more promising future.

In the classrooms, libraries, and laboratories of KVS, one can feel the heartbeat of inclusivity. The institution welcomes students from diverse backgrounds, fostering an environment where differences are celebrated and where students learn the value of empathy, respect, and unity. KVS is a true reflection of India's rich cultural tapestry, where students grow to appreciate the beauty of diversity.

The excellence of KVS extends beyond academics, with a strong emphasis on holistic development. It grooms leaders, artists, athletes, and innovators, instilling values that extend far beyond the classroom. KVS Teachers' Training Zonal Institutes of Education and Training also stand as the pinnacles of pedagogical innovation, illuminating the path for educators across India. These institutes serve as guardians of the future, equipping teachers with the knowledge and skills to empower their students to excel and thrive. KVS alumni are also a testament to the institution's ability to produce responsible citizens and contributors to society.

KVS is not just an educational institution, it is a source of inspiration, a cradle of dreams, and a guardian of the nation's future. Its glory shines brightly, and its impact is immeasurable, as it continues to mold generations of individuals who will leave an indelible mark on the world.

Mukesh Kumar
Director
ZIET Chandigarh





Sahastra Bahu Temple, Gwalior



The Glorious Journey of KVS

The Kendriya Vidyalaya Sangathan (KVS) is a prominent educational institution in India, managed by the Ministry of Education (formerly the Ministry of Human Resource Development), Govt. of India. It was established in 1963 with the aim of providing quality education to the children of government employees, particularly those in transferable jobs. KVS has since grown to become a vast network of schools spread across the country and abroad, known for their commitment to academic excellence and holistic development.

KVS operates a chain of Kendriya Vidyalayas, which are affiliated with the Central Board of Secondary Education (CBSE). The primary objectives of KVS are:

1. To cater to the educational needs of children of transferable government employees.
2. To provide a uniform curriculum and high standards of education across the country.
3. To promote excellence in academics and co-curricular activities.
4. To foster a spirit of national integration and a sense of unity among students.

One of the key components of KVS is its training centers. KVS is committed to the professional development and training of teachers and other staff. To ensure that teachers and staff in Kendriya Vidyalayas are equipped with the latest pedagogical techniques and best practices, KVS has established several Zonal Institutes of Education and Training (ZIETs) across the country. KVS ZIET Gwalior is one of them.

KVS ZIET Gwalior, the first zonal training institute of KVS, was inaugurated on November 20, 2002. Located in the heart of India, it serves as a crucial hub for the training and professional development of teachers.

Here are some key aspects of the KVS ZIET Gwalior:

Training Programmes:

ZIET Gwalior conducts a variety of training programs for KVS staff and staff of schools other than KVS. These programs cover subjects like educational technology, curriculum development, assessment strategies, and more. They aim to enhance the professional competence of employees.

Infrastructural development:

Various gardens have been developed on the campus. These gardens provide an excellent platform for hands-on and experiential learning and enhance the potential of learning.

Biodiversity Park on a training institute's campus enhances the educational experience, fosters a sense of responsibility towards the environment, and contributes to biodiversity conservation. It is a valuable initiative that aligns with the principles of sustainable development and contribution to the environment.

Art galleries provide a platform to display creative endeavors, including paintings, sculptures, photographs, and other artistic expressions. This not only acknowledges talents but also encourages creative expression and an art-integrated approach to learning.

Research and Innovation: ZIET Gwalior time and again engages in research and innovation in the field of education to explore new teaching methods, assessment techniques, and educational technologies, which can then be implemented in Kendriya Vidyalayas.

Collaboration: ZIET Gwalior collaborates with various educational institutions and organizations other than KVS to keep abreast of the latest trends and innovations in education. This collaborative approach helps in the continuous improvement of schools under KVS too. Recently, it collaborated with the British Council of India to train teachers of KVS, NVS, and other CBSE schools on "progression in core skills training."

In conclusion, Kendriya Vidyalaya Sangathan plays a vital role in shaping the educational landscape of India. KVS not only provides quality education to the children of government employees but also focuses on the professional development of teachers and staff, ensuring that schools maintain high standards of education and contribute to the overall development of students.

Dr. Anurag Yadav
Director
ZIET Gwalior



Worli Sea Link, Mumbai



Through Education KVS Building Nation

The journey of Kendriya Vidyalaya Sangathan (KVS) over the last 60 years has been in the field of education. KVS, established in 1963, has consistently strived to provide quality education to the children of central government employees and others, fostering, by exhibiting itself as a “Miniature Bharath,” an environment of academic excellence and holistic development.

KVS, which began modestly with a few schools and has since expanded quickly, is currently in charge of more than a thousand Kendriya Vidyalayas across the country. These institutions have gained a reputation for demanding academic standards, supporting cultural diversity, and developing talent across many disciplines.

Through the integration of technology, cutting-edge teaching techniques, and exorbitant teacher training programs, the organization has adjusted to shifting paradigms in education.

Many prosperous people who have achieved success in various fields have come out of KVS over the years, and they credit the ideals that were ingrained in them during their early education in Kendriya Vidyalayas for their foundation. KVS is dedicated to its goal of influencing the future of the country by giving its students access to a high-quality, inclusive education, even as it develops further. The journey of Kendriya Vidyalaya Sangathan is a testament to its enduring dedication to educational excellence and nation-building.

Shahida Parveen
Director
ZIET Mumbai

Mysore Dussehera, Mysuru





Schools of the Future

What will the schools of the future be like? More importantly, will we need the schools that we have today?

In the past few years, there have been a number of disruptions in our lives, and these have made us review our lives—both personal and public—in light of the changing needs of the environment around us.

Schools have traditionally been big, imposing buildings with wide, expansive spaces for classrooms, laboratories, offices, gardens, and playfields. High walls surrounding the campus to ensure students stay in and ‘others’ stay out; high metal gates to stop ‘others’ from coming in and students from going out; guards at the gates of learning to ensure only a chosen few are allowed in.

But can learning be restricted to the four walls of a school or classroom? Can we stop ‘others’ from learning what we teach our students in our classroom? Won’t they like modern-day Eklavyas to learn from their gurus?

Another question is: will our students, the ones we keep safe in our schools, learn only what we teach or only from us?

The answer to all these lies in our future vision of a school.

The school of the future will have to be more than a building with four walls, a high boundary wall, and a sturdy gate with guards meant to keep out rather than welcome in; it will be more like a modern-day Ashrama where everyone from the community can come to learn or teach. The role of teacher and taught will change every hour, and I doubt if this school will be regulated by a bell!

Today, students attend school for 5 and a half to 6 and a half hours, 6 days a week. In addition, they also attend coaching for games, the arts, future studies, and even completing home assignments. School in the future could change the norms of attendance—3 days in person and 3 days online, 3 hours a day or something similar—and even opt for staggered timings, e.g. 3 hours in the morning for students of pre-primary and classes 1–4, afternoon for students of classes 5–8, and evening for classes 9–12, and similarly, access to facilities for libraries, sports, skills, counseling services, and laboratories could also be staggered and shared by all at specific times. Students could attend theory in online mode, have discussions, collaborate on projects, and attend tutorials in small groups in person in school.

Stakeholders—parents, teachers, grandparents, members of the community, and students from other learning systems—will be encouraged to not just offer their knowledge and skills to the students but also enhance their knowledge and skills by attending classes with the students. In other words, the school would become the heart and soul of the community—the center of their existence.

The design and structure of the school building of today probably stem from our idea of factories where things had to be produced in mass and a large number of able-bodied factory workers had to be managed and kept in line to ensure steady production, but schools are not meant to produce ‘things’. Schools are not meant to ‘produce’ anything. Schools are meant to provide safe, open spaces for willing minds to soar together or alone, and an industrial-style building with rows and rows of classrooms meant to keep children in cannot do that. Such school buildings are more like automated, restrictive assembly lines than open, safe spaces to encourage learning, thinking, collaboration, and discovery.

The school building of tomorrow will have to be re-imagined as an open, welcoming space for learners to express their thoughts and feelings in a variety of ways—performing arts, creative expression, skills like woodcraft, mechanical crafts, sports, and many other ways. Spaces will also be required for interactions between learners of all age groups—young and old. In a future school, most learning would be technology-driven, and the physical infrastructure of the school would need to be modified to cater to both the technology needs and the physical and emotional needs of the learners.



Open physical spaces where communities can physically interact and share knowledge and experiences and also indulge in activities like tinkering with machines, computing, robotics, invention and innovation, art and craft, music, drama, storytelling, folklore, and many other interests will need to be created on the school campus.

Then the question arises: will we still focus on the 3 Rs of learning—reading, writing, and arithmetic—or the 4Cs—critical thinking, creative thinking, communicating, and collaborating—or will we have moved on to some other skills or knowledge that would be essential to survive in the world of the future? With the changing times, we would need to not only change what we learn at school but also how, when, and from whom.

Learning about the environment and sustainability practices, survival skills, languages, communication skills, leveraging technology ethically, happiness, emotional sensibility, empathy, and getting along with others will become more important than learning the traditional subjects already taught in today's schools. There will be more focus on sustainable farming, ethics, decision-making skills, and learning about ethnic knowledge, traditions, and cultures across the world.

How and from whom will we learn—through technology and in person, in groups, by exploring our surroundings, surveys, projects, research in libraries as well as on the web, using immersive experiences, virtual reality, and augmented reality, using the real world as an example, asking, questioning, and sharing, listening to stories of different cultures—ethnic and global, and many other ways? There might not be a classroom where a person teaches and groups of students merely listen and take notes; in fact, a person called a teacher may not be in the same city or even country but across the globe, connected virtually and connected through AI, and in some cases, AI might be the sole facilitator. We will learn from each other too, and there won't really be a hard separation between facilitators or teachers and learners. A facilitator or group leader, while exploring one aspect, might take on the role of a learner while exploring another avenue of learning.

When talking about teachers and students, the question of the number of teachers to be employed for a set number of students will arise; however, it will not be a formulaic ratio as the requirements of the future will be different from what we have today. We will have to consider employing specialists, professionals, artists, artisans, students, the elderly, and experts from different walks of life to interact with students in school as part of *Sewa*, or service to society.

Sewa will also be an integral part of learning for the learners; it could be in the form of hours spent with the elderly, helping out at other learning centers, providing their time and expertise for digital literacy, voluntary community service, or working at a laboratory or library.

When will we learn? The concept of age-specific learning, the number of hours for a subject, the number of years for schooling, and a specific time for school may not be possible in the future. Flexibility in what we choose to learn, at what time, and at what level will have to be provided so that learning is more individualized as well as contextualized. Personalized learning plans and trajectories with flexibility to modify learning choices may be allowed to students.

Technology and technology Integrated learning will be a part of a learner's life. Most learners will either have their own personal wearable devices for connecting with learning facilitators, knowledge resource providers, collaborators, mentors, and monitors. Will we require computer labs or physical digital classrooms? Or even classrooms with big digital devices to provide instruction to a large number of students?

Since learning and methods of learning will have evolved to a more personalized and collaborative stage, we will not require laboratories dedicated to computers only, nor Creation and sharing of resources for learning in schools: today, when we learn, we are completely reliant on a text book, which is governed by a syllabus, which in turn is broadly based on a curriculum, which in turn is based on the National Curriculum Framework of the nation. The reliance on the text book is to such an extent that we teach only the text book and not even the syllabus, thereby strictly restricting our learning experiences to a limited scope of life. Will this restrictive and, to a certain extent, prescriptive way of learning suit our needs in the future? In the coming times, we will have to delimit our vision of life and learning, collaborate with learners and facilitators in deciding future learning needs, and also collaborate on creating, collating, and sharing the resources required to fulfill those future needs. In a sense, there will be broad parameters of learning to be followed by the facilitators, but the selection of specific materials, methodology, time to be allotted, and other decisions will be left to the learner and facilitator. Resources for learning too will be co-created by learners, facilitators, and other stakeholders in society and will be open resources that are easily available and shared with everyone.



Assessment and evaluation, too, will change in schools in the future. As there will be flexible timings in terms of when a learner wants to study a certain discipline or at what level, the sources for learning will be flexible and malleable; learners will be creating their own learning resources, even deciding whom they want to learn from; assessment too will be flexible in form and duration. Assessment will be more about whether a certain level of learning decided by the learner has been attained by them, and assessment need not be in the form of a sit-down, proctored, pen-and-paper test. It could be in the form of an interview, a group discussion, a collaborative cross-cultural or integrated project, the creation of an assessment for other students, the making of a film or video, or collaborating with an AI tool to create something for society.

Evaluation too will change, or in some cases, even disappear, as the curriculum will not be an annual activity, and so year-end evaluation too will not be possible for most learners, which means the concept of success and failure will also be done away with. Instead, we will have a blended mode of evaluation where learners will decide what they want to be evaluated on, when, and at what level. On the basis of this evaluation, in addition to the continuous assessment, they will earn certifications for various levels of learning in each discipline, which will be added to their portfolio of life-long learning.

A school of the future may not have walls or even a guard to protect its portals, nor will it have a bell to govern the sound of footsteps in the corridors; in fact, there may not even be corridors or teachers of today to regulate and discipline unruly behavior, so how will we ensure discipline in schools of the future? We can't imagine that there won't be any indiscipline in the schools of tomorrow. Where there are rules, there will be individuals who will object to them and try to change them. The only change will be the constitution of a democratic system of discipline that will rely heavily on self-discipline, positive reinforcement for acceptable behavior, self-reflection, and self-correction by the learners themselves.

Schools of the future will surely be different from the schools of today, as our requirements from a future school will be different from what they are today, and learning, being a dynamic and continuous process and not a static activity, will continue to change and reflect the ever-changing landscape of our lives

These changes will be seen in our approach to learning, and Kendriya Vidyalaya Sangathan, which is now celebrating its 60 years of inception, being a dynamic and vibrant organization, will be able to become an educational organization relevant in the future.

Menaxi Jain
Director
ZIET Mysuru



KVS Commissioners Since 1963

Our Visionary Leaders



Sh. D.L. Sharma
From Oct.1968
to 30.09.1970



Miss. A. Chari
From 10.11.1970
to July.1974



Sh. P.R. Chauhan
From 24.12.1974
to 24.12.1977



Sh. H.H. Pawar
From 15.11.1979
to 31.03.1983

Sh. L.O. Joshi, IAS
From Dec.1965
to Sept.1968



Sh. Baldev Mahajan
From 25.12.1977
to 14.11.1979



COMDE. Satbir, AVSM-
From 10.05.1983
to 31.12.1985





Dr. R.C. Sharma
From 01.01.1986
to 17.10.1988



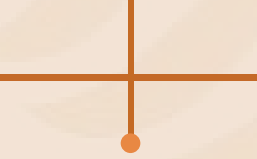
Mrs. Lizzie Jacob, IAS-
From 17.05.1993 to
16.05.1998



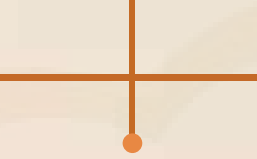
**Sh. Ranglal Jamuda,
IAS**
From 01.09.2004 to
30.11.2009



**Sh. Santosh Kr. Mall,
IAS**
From 01.05.2015 to
30.06.2020



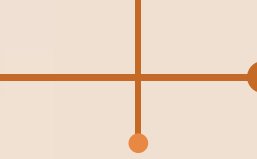
**Sh. D.S.
Mukhopadhyay, IAS**
From 01.06.1990 to
16.05.1993



Sh. HM Cairae, IAS
From 12.12.1998 to
13.05.2004



**Sh. Avinash Dikshit,
IDAS**
From 07.04.2010 to
06.04.2015



**Smt. Nidhi Pandey,
IIS**
From 27.07.2020 to
Till Date





केन्द्रीय विद्यालय कारगिल, ट्रेसपोन
KENDRIYA VIDYALAYA KARGIL, TRESPONE

KV Trespone, Kargil



Key Facts

- ▶ Kendriya Vidyalaya Sangathan (KVS) was established in 1963 with 20 regimental schools to cater to the children of transferable employees of the Government of India. Currently, there are 1255 KVs across the country, educating over 14 lakh students.
- ▶ KVS was officially registered as a society under the Societies Registration Act (XXI of 1860) on December 15, 1965. This date is celebrated as KVS Foundation Day.
- ▶ The motto of Kendriya Vidyalaya Sangathan is “तत् त्वं पूषन् अपावृणु,” which translates to “O Lord, unveil the covering from truth.” This motto is derived from Ishavasyopanishad.
- ▶ Three Kendriya Vidyalayas operate on foreign soil, namely Kathmandu, Moscow, and Tehran.
- ▶ KVS has its headquarters in New Delhi, and 25 regional offices nationwide oversee the academic and administrative functions of schools.
- ▶ All KVs are co-educational composite schools providing uniform education. They are affiliated with CBSE and follow the NCERT curriculum. KVs are renowned for imparting quality education and fostering various co-curricular activities for the all-round development of students.
- ▶ The pass percentage of KVs ranks among the best within the CBSE school system.
- ▶ Instilling the spirit of ‘Indianness’ in students through activities like EBSB, sports, art, and NCC is one of KVS’s missions.
- ▶ To ensure quality training for teachers, KVS operates five Zonal Institutes of Education and Training (ZIETs) located in Bhubaneswar, Chandigarh, Gwalior, Mumbai, and Mysuru.
- ▶ Seventy Kendriya Vidyalayas across the country operate in double shifts.
- ▶ Green Building Norms have been implemented in all newly constructed and under-construction buildings of Kendriya Vidyalayas.
- ▶ The provision of ramps and special toilets for Divyangs has been incorporated into KVS school building norms and implemented.



तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन Kendriya Vidyalaya Sangathan

18, संस्थागत क्षेत्र, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110016
18, Institutional Area, Shaheed Jeet Singh Marg, New Delhi-110016



<https://kvsangathan.nic.in/>



@KVSHQ



@KVS_HQ



@kvshqr



KVS HQ

